पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

वार्षिक शुल्क : 60 रुपए

मातृवन्दना

श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द 5114, अगस्त, 2012

जम्मू कश्मीर पर सरकारी वार्ताकारों की अलगाववादी रिपोर्ट

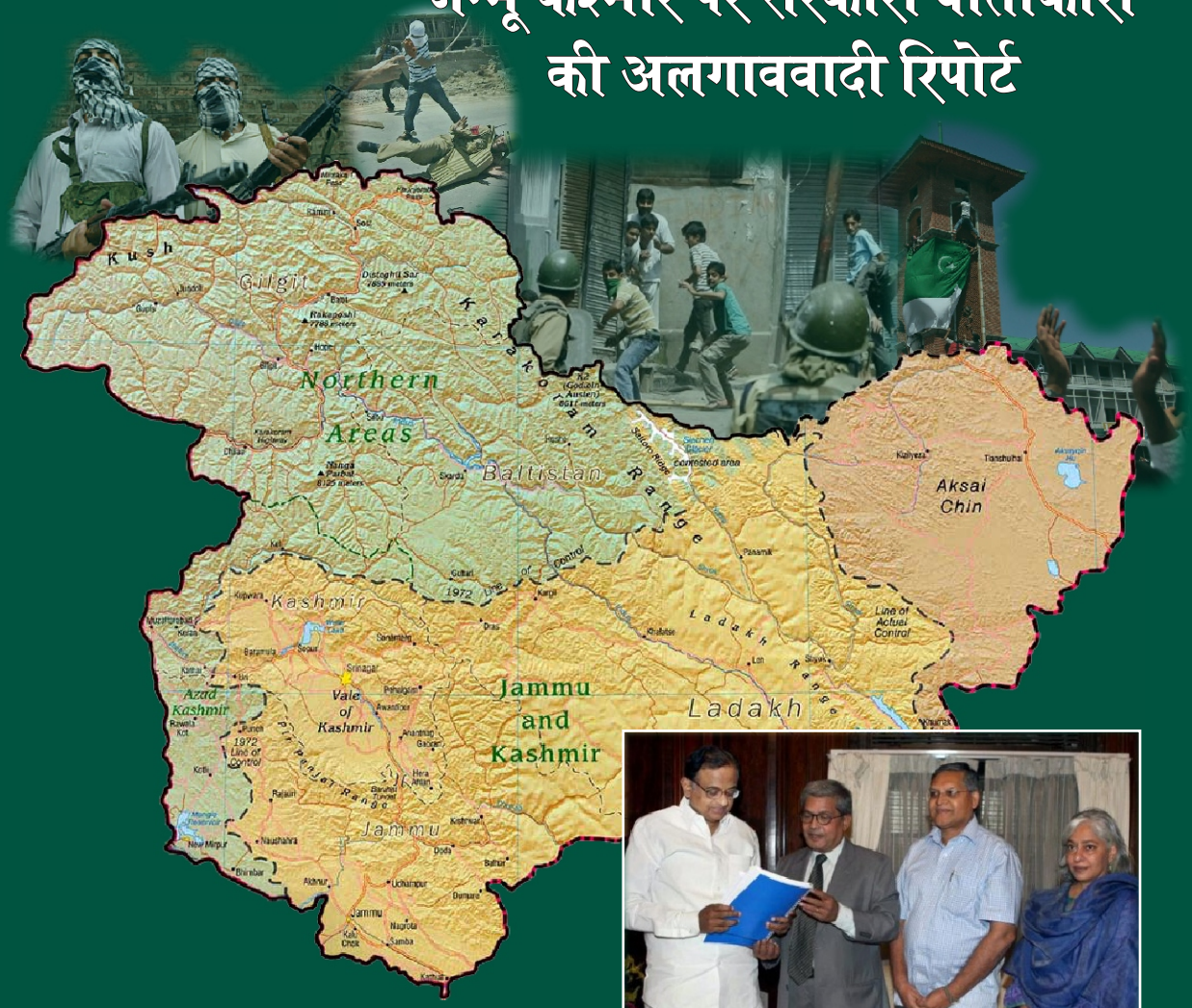

केन्द्रीय गृहमंत्री को रिपोर्ट सौंपते हुए वार्ताकार।

भारतीय संसद, संविधान, राष्ट्रध्वज और सेना के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह

जम्मू-कश्मीर के सम्बंध में वार्ताकारों की रपट के विरूद्ध देश भर में प्रदर्शन

भोपाल में जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र, के कार्यकर्त्ता राज्यपाल के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपते हुए।

दिल्ली स्थिति जंतर मंतर में आयोजित धरने पर जम्मू-कश्मीर पीपल्स फोरम (दिल्ली) एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी तथा नागरिक।

इस अंक में

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते, निघर्षणच्छेदन-तापताडनैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते, त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा॥

जिस प्रकार सोना रगड़कर, काट कर, तपा कर और कूट कर इन चार विधियों से परखा जाता है, वैसे ही पुरुष भी त्याग, शील, गुण और कर्म इन चारों से परखा जाता है।

वर्ष : 12 अंक : 08

मातृवन्दना

मासिक

श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द 5114, अगस्त, 2012

परामर्शदाता
सुभाष चन्द्र सूद

✡

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

सह-सम्पादक
कृष्ण मुरारी

✡

वार्षिक शुल्क
साठ रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
शर्मा भवन, नया शिमला-171 009
दूरभाष व फैक्स :
0177-2671990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला-171009 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

एक अलगाववादी रपट..... 8

स्वायत्तता, स्वशासन, आजादी, पाकिस्तान में विलय, भारतीय सेना की वापसी, सुरक्षाबलों के विशेषाधिकारों की समाप्ति, जेलों में बन्द आतंकियों की रिहाई, पाकिस्तान गए कश्मीरी आतंकी युवकों की घर वापसी, अनियंत्रित नियंत्रण रेखा और जम्मू-कश्मीर एक विवादित राज्य इत्यादि अलगाववादियों के एजेंडे को इस रपट का आधार बनाया गया है। वार्ताकारों के सुझावानुसार 1952 के बाद जम्मू-कश्मीर में लागू भारतीय संसद के सभी कानूनों की समीक्षा के लिए एक संविधानिक समिति गठित की जाएगी। जिसके निष्कर्ष पर पहले हुर्रियत कान्फ्रेंस और बाद में पाकिस्तान और पीओके के प्रतिनिधियों के साथ वार्तालाप होगा।

सम्पादकीय	मूल सांस्कृतिक चरित्र का प्रतीक कश्मीर कहां?	5
प्रेरक प्रसंग	मूर्ख मित्र से समझदार दुश्मन भला	6
चिन्तन	सफलता कैसे प्राप्त करें	7
संगठनम्	ऊना में 20 दिवसीय प्रथम वर्ष शिविर सम्पन्न	12
देवभूमि	हिमाचल में गुटखा-खैनी पर प्रतिबंध	15
देश-प्रदेश	भारत पर्यावरण के प्रति सबसे अधिक जागरुक	16
घूमती कलम	गाड पार्टिकल-हिग्स बोसोन	18
दृष्टि	कबाड़ी ने बनाया हवा से चलने वाला इंजन	20
प्रतिक्रिया	साठ वर्षों तक हम और हमारे सांसद	21
काव्य-जगत	बलिदानी शौर्य को नमन	22
महिला जगत	नारी अबला नहीं सबला है	23
स्वास्थ्य	दही बढ़ाता है रोग प्रतिरोधक क्षमता	24
कृषि	जरूरी है मिट्टी का परीक्षण	25
युवा-पथ	समाज सेवा में भी है कैरियर	26
समसामयिक	अमरनाथ यात्रा की अवधि घटाने का भयानक नतीजा	27
बलिदान	वजीर राम सिंह पठानिया	28
योग	प्राण और प्राणायाम	30
विश्व दर्शन	दक्षिण कोरिया में वैदिक गणित	32
बाल जगत	कीटों की शरीर रचना	33

पाठकीय

पाठकों के पत्र.....

क्रांतिकारी विचारों की हस्ताक्षर मासिक पत्रिका मातृवन्दना का नाम सुनकर एवं पढ़कर देशभक्ति और संस्कार की हवा बहने लगती है वहीं जनहित के कल्याणार्थ जोश से हाथ पांव रोमांचित एवं सक्रिय होने लगते हैं। यही सब लगा जून 2012 अंक पढ़कर। शिवाजी महाराज राज्याभिषेक का वाकई मातृवन्दना पठनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी है जो जरूरी ही नहीं बल्कि समय की भी मांग है। पिछले दिनों आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट ने मुस्लिम आरक्षण का सब कोटा रद्द कर जो निर्णय दिया है स्वागत योग्य है और यह ठीक भी है कि स्वार्थी राजनीतिज्ञों को इससे सबक भी मिला कि धर्म के आधार पर बांटकर तरक्की के मार्ग पर प्रशस्त नहीं हुआ जा सकता। मगर वास्तव में अगर धर्म निरपेक्ष इस राष्ट्र में जाति पाति से ऊपर उठकर भेदभाव मिटाना ही है तो वह लच्छेदार भाषणों से सम्भव नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से अपने जाति सूचक 'सरनेम' को हटाकर भारतीय शब्द जोड़ने के कानून बनाने से ही सम्भव है। इसके लिये अपने अंदर की ईमानदारी को जगाना होगा और नेताओं को अपने 'सरनेम' जिसमें चौहान, शर्मा, वर्मा, ठाकुर आदि हटाकर समरसता का परिचय देकर यानी यूं कहें कि भेदभाव से ऊपर उठने की मिसाल की गौरवमयी शुरुआत करनी होगी। एक और सनातन उपाय भी है। हम सब ऋषियों की संतान हैं, हिन्दू समाज के हर वर्ग के व्यक्ति का कोई न कोई गोत्र है जो उसके आदि जन्मदाता ऋषि का नाम है। अपनी विशिष्ट पहचान के लिए अपने नाम के साथ उसे जोड़ा जाना हमारी सनातन संस्कृति को और मजबूत कर सकता है तभी और अधिक फलीभूत होगा मातृवन्दना का यह लेखन।

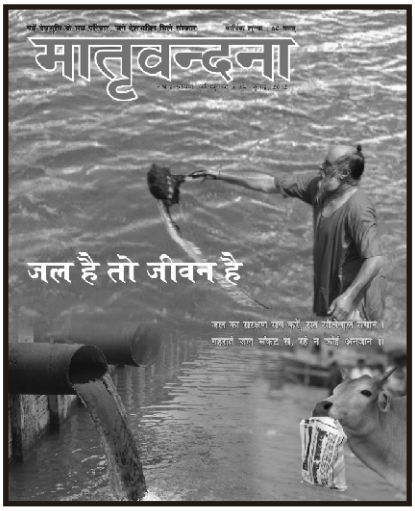

– **भीम सिंह**, सुन्दरनगर, मण्डी

मातृवंदना के जुलाई अंक में बाबा अमरनाथ की यात्रा की समयावधि घटाने से उत्पन्न होने वाली अव्यवस्थाओं को उजागर किया था, उसका मैं प्रत्यक्षदर्शी हूं। दस वर्षों से लगातार श्री अमनाथ जी की यात्रा पर जा रहा हूं। इस वर्ष भी 2 जुलाई को हम 62 यात्री पहलगाम से नूनवन के बेस कैम्प से छोटी गाड़ियों में चन्दनवाड़ी पहुंचे। चन्दनवाड़ी से हम सभी यात्रियों ने पैदल यात्रा शुरू की। इस दौरान घोड़े और पीट्ठू उठाने वालों ने बताया कि हमारी हड़ताल शुरू हो गई है। दरअसल हुआ यह था कि महागुनेश्वर पर्वत के पास एक घोड़े का पांव फिसल गया जिसके कारण वह खाई में जा गिरा इस कारण जहां घोड़ा घटनास्थल पर मारा गया वहीं घुड़सवार श्रद्धालु भी बुरी तरह से घायल हो गया। इस घटनाक्रम में घोड़े वाले द्वारा सवार की पूरी तरह अनदेखी कर अपने घोड़े को बचाने के लिए ही प्रयास करना मौके पर तैनात सुरक्षा बल के जवान को खटका था, उसने घोड़े वाले की पिटाई कर दी थी। परिणाम स्वरूप रोष प्रकट करते हुए घोड़े वालों ने न केवल यात्रियों से उपरोक्त व्यवहार किया बल्कि शेषनाग के रास्ते में लगाए एक भंडारों में भी जमकर तोड़फोड़ की। इसके कारण 2 दिन भंडारों में कोई जलपान और भोजन तैयार नहीं हो पाया जिसके चलते मेरे साथ पंजाब, उत्तर प्रदेश से आए पांच अन्य श्रद्धालुओं ने मिल कर प्रशासन, पुलिस प्रशासन के विरूद्ध जमकर नारेबाजी की। देखते ही देखते हमारे साथ हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने इस मनमानी के खिलाफ प्रदर्शन किया। सभी ने श्री अमरनाथ श्राईन बोर्ड के अधिकारियों से बातचीत की तथा स्थानीय जिला प्रशासन के अधिकारियों का घेराव भी किया। उनके समक्ष यह मांग रखी गई कि सभी भंड़ारों को पूर्ण सूरक्षा प्रदान की जाए, लोगों को परेशान करने वाले घोड़े वालों के विरूद्ध कानूनी कार्रवाई की जाए, तथा ऐसी घटना दोबारा ने हो उसके लिए पुख्ता प्रबंध किए जाए।

इस घटना से पता चलता है कि अमरनाथ यात्रा को जम्मू-कश्मीर सरकार गम्भीरता से नहीं ले रही है। सभी शिवभक्त अपनी जान संकट में डालकर इस धार्मिक यात्रा को अंजाम दे रहे हैं। **गोपाल अग्रवाल**, नाहन, सिरमौर

स्मरणीय दिवस (अगस्त)

रक्षाबंधन	2 अगस्त
जन्माष्टमी	10 अगस्त
गुग्गा नवमी	11 अगस्त
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
वजीर राम सिंह शहीदी दिवस	17 अगस्त

मूल सांस्कृतिक चरित्र का प्रतीक कश्मीर कहां?

भारत का अभिन्न अंग जम्मू-कश्मीर केवल मात्र भूखण्ड नहीं अपितु हमारे मूल्यों का प्रतीक है। वितस्ता नदी को पुन: प्रकट करने वाले आदि ऋषि कश्यप की तपोस्थली कश्मीर पर सर्वप्रथम उन्हीं के पुत्र नील ने शासन की बागडोर सम्भाली। अनन्तर 7वीं शताब्दी तक अविछिन्न रूप से हिन्दू-प्रजा ने स्वर्गतुल्य कश्मीर में सुख और शान्ति का जीवन व्यतीत किया। 7वीं शताब्दी में सिंध पर अरबों के आक्रमण से सिंध के राजा दाहिर के पुत्र जयसिंह ने कश्मीर में शरण ली, उस समय वहां की शासक कोटा रानी थी। इसी काल में पर्शिया से आए इस्लाम के प्रचारक शाहमीर ने इस्लाम का प्रचार कर धीरे-धीरे अपनी जड़ें जमाना प्रारम्भ किया तथापि 14वीं शताब्दी तक कश्मीर में शैव और बौद्ध मतों ने अपना प्रभाव बनाए रखा। प्राचीन काल में कश्मीर संस्कृत, सनातन धर्म और बौद्ध शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र था और उसे विद्या व ज्ञान में काशी, नालंदा और पाटलीपुत्र के समकक्ष माना जाता था। श्री और सरस्वती का एक साथ उपभोग करने वाले गुप्तकालीन कश्मीर के महाराजा मातृगुप्त स्वयं एक श्रेष्ठ कवि थे। महाकवि भर्तृमेंठ उनके प्रिय मित्र थे। कश्मीर की पंडित परम्परा और राजाओं की विद्वद्प्रेम सम्बंधी साहित्य चर्चाएं संस्कृत साहित्य में सर्वत्र उपलब्ध हैं। 'हर विजय' महाकाव्य के प्रणेता महाकवि रत्नाकर के आश्रयदाता महाराज जयापीड ने अपने कश्मीरी राजसभा में भारत के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों एवं कवियों को ऊंचा स्थान दिया जिस कारण अन्य राज्यों में विद्वानों का मानों अकाल पड़ गया था। राजा अवंति वर्मा (855-883 ई.) के राज्यकाल में आनन्द वर्धन जैसे काव्य शास्त्री ने राजसभा को अलंकृत किया। संस्कृत में सर्वमान्य ऐतिहासिक लेखक महाकवि कल्हण ने राजा जय सिंह (1127-1149 ई.) के काल में राजतरंगिणी की रचना की थी जिसमें उन्होंने कश्मीर के पूर्ववर्ती राजाओं एवं इतिहासकारों का भी वर्णन किया था।

कश्मीर की समृद्ध संस्कृति मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा नष्ट भ्रष्ट कर दी गई। अनन्तर मुस्लिम वर्ग की बहुलता से तथा परतंत्रता की लम्बी अवधि के कारण हिन्दू समाज यहां बिखरता गया। भारत के स्वतंत्र होने पर कश्मीर को अंग्रेजों की चाल और नेहरू की महत्त्वाकांक्षा का खामियाजा भुगतना पड़ा। देश का विभाजन हुआ। धर्म के आधार पर मुसलमानों को पाकिस्तान देना पड़ा। कश्मीर के एक टुकड़े पर जबरदस्ती पाकिस्तान ने कब्जा कर लिया। हिन्दुओं की ही यह उदारता थी कि उसने हिन्दुस्तान में ही रहने की इच्छा रखने वाले मुसलमानों को हिफाजत सहित आश्रय दिया। परन्तु कश्मीर में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद चलता रहा। आज तक भी यथावत् स्थिति बनी हुई है। जम्मू-कश्मीर की कुल आबादी का 20 प्रतिशत तबका ही अलगाववादी विचारधारा को पोषित करता है जिस कारण वहां अशांति बनी हुई है और केन्द्रीय सरकार उन्हीं को अधिक महत्त्व देकर बाकि 80 प्रतिशत आबादी की भावनाओं से खिलवाड़ कर रही है।

अधिकांश स्थानीय राजनीतिक दलों और हुर्रियत जैसे अलगाववादी संगठनों की सोच के अनुरूप केंद्रीय सरकार भारतीय संविधान की अवहेलना कर वहां और अधिक स्वायतता देने की फिराक में है। वहां की जनता, राजनीतिक दल, अन्य संगठन तथा अलगाववादी संगठनों के साथ बातचीत करने तथा उनकी मंशा जानने के लिए जिन वार्ताकारों को सरकार ने नियुक्त किया था, उनकी रिपोर्ट सरकार ने सार्वजनिक कर दी है। उस रिपोर्ट पर देश की क्या प्रतिक्रिया हुई है, उसी को आधार मानकर मातृवन्दना के इस अंक के आवरण में रिपोर्ट को विश्लेषित किया गया है। जहां एक ओर वार्ताकारों के चयन पर ही प्रश्नचिह्न है वहां उनकी वार्ता-प्रक्रिया और रिपोर्ट भी संदेहास्पद है। सरकार की नीयत और नीति पर भी उंगली उठती है। सब जानते हैं कि कश्मीर से अधिकांश हिन्दू पलायन कर चुके हैं। विस्थापित पंडितों के घर स्थानीय मुसलमानों के कब्जे में हैं। बाबा अमरनाथ की यात्रा में सरकार द्वारा निरंतर कई व्यवधान डाले जा रहे हैं, ऐसा लगता है कि कश्मीर प्रदेश को हिन्दू विहीन राज्य बनाने की तैयारी चल रही है। हमें शीघ्र सचेत होकर इन अनुचित प्रयासों का डटकर मुकाबला करना होगा। ❑

प्रेरक प्रसंग

हमें पश्चिम से उसकी कलाओं और भौतिक विज्ञान की शिक्षा लेनी होगी। पश्चिम के विज्ञान की सहायता से भूमि को खोदो और अनाज उत्पन्न करो–पर दूसरों की दासता करते हुए नहीं, बल्कि पाश्चात्य विज्ञान के सहयोग से भुजाओं के बल पर उत्पादन के नए तरीकों का आविष्कार करके।

– ***स्वामी विवेकानन्द***

सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति कौन

इस संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं–पहले वे जो केवल अपने परिवार तक ही सीमित होते हैं। उनके परिवार में यदि बेटा, मां, भाई या बहिन, पति या पत्नी बीमार हुए तो वह चिंतित और दु:खी होते हैं। डॉक्टर के पास दौड़ते हैं और इलाज करवाते हैं और करवाना भी जरूरी है क्योंकि यह हमारा परिवार के प्रति कर्तव्य है। परन्तु अगर किसी पड़ोसी को तकलीफ हो उसका बच्चा बीमार हो तो कोई वेदना नहीं होती। वह व्यक्ति धनवान, करोड़पति भी हो तो भी मनुष्यता की दृष्टि से छोटा है।

दूसरा व्यक्ति ऐसा है यदि उनके घर में कोई बीमार होता है तब उसे अवश्य वेदना होती है और यदि पड़ोस में भी कोई बीमार होता है तब भी उसे उतनी ही तकलीफ होती है। वह छटपटाता है कि मैं उसके लिये क्या करूं। यद्यपि वह उसका इलाज नहीं करवा पाता, पर उसके मन में एक तकलीफ होती है, खाना-खाते समय उसको एक वेदना होती है। ऐसा व्यक्ति मध्यम स्तर का व्यक्ति है। तीसरे प्रकार का वह व्यक्ति है जो समाज की पीड़ा के प्रति केवल संवेदनशील ही नहीं अपितु उसकी पीड़ा हरण करने में भी सहायक सिद्ध होता है। देश में कहीं अकाल पड़ता है। कहीं प्राकृतिक आपदाएं भूकम्प आदि आते हैं। आसपास में कोई बीमार है, कोई अत्यंत कठिनाई में है तो हमें आगे बढ़कर उनकी सहायता करनी चाहिये। खाली चिंतित ही न होकर उनकी सहायता करने हेतु जितना हमारा सामर्थ्य हो प्रयास करें तभी मनुष्य जीवन जीने का हमारा लक्ष्यपूर्ण होगा। यह तभी हो सकता है जब हमारी धर्म में आस्था होगी। हमारी सोच 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की होनी चाहिये। धर्म हमारे जीवन का जरूरी अंग है। हमें इस बात का गर्व है कि हम हिन्दू हैं। मगर हम दूसरे धर्मों का भी आदर करते हैं।

एक बार भगवान बुद्ध एक गांव में गए और गांव में जाकर पूछा– तुम्हारे यहां कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ है! गांव वालों ने कहा- हमारे यहां जन्म से कोई बड़ा आदमी पैदा नहीं हुआ। आगे जाकर बड़ा आदमी बना है, जन्म से तो बड़ा आदमी कोई होता ही नहीं, जन्म तो सबका एक जैसा होता है मगर आगे जाकर अपने कार्यों से कृष्ण बन सकता है, राम बन सकता है, महावीर, बुद्ध बन सकता है। बड़ा आदमी अपने कार्यों से बनता है। जब आपका जन्म हुआ था तब प्रभु ने आप में वे सब तत्व दिए थे और वर्तमान में भी हैं। यदि आप उनसे परिचित ही नहीं हो तो आप उस महानता को नहीं प्राप्त कर सकते जिस महानता को महापुरुषों ने प्राप्त किया। ❑

– मनजीत कुमार

मूर्ख मित्र से समझदार दुश्मन भला

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह अपने परिवार, सगे सम्बंधी, पास-पड़ोस, मित्र एवं दुश्मन की मंडली से घिरा रहता है। किसी से मित्रता, किसी से शत्रुता होना स्वाभाविक बात है। परन्तु जब किसी मूर्ख मित्र, मूर्ख प्रियजन से मनुष्य को पाला पड़ता है, तो उसका जीवन स्वाभाविक तौर पर दुखदायी बन जाता है। मूर्ख की हर बात मूर्खता भरी होती है। हर कार्य मूर्खता भरा होता है। मानवता नाम की बात उसमें जरा भर भी नहीं होती। इसीलिये किसी भी समय कोई भी बखेड़ा खड़ा हो सकता है। इसलिये मूर्ख मित्र से दूरी बनाए रखने में ही भला होता है। अत: मित्र बनाने से पहले इस बात पर सोच विचार करें।

यदि कोई समझदार व्यक्ति आपसे दुश्मनी भी रखता है तो चिंता मत कीजिये। वह आप के लिए अहितकारी नहीं होगा। हो सकता है कि आपके व्यवहार में कोई कमी हो, जिस कारण वह आपसे दुश्मनी रखता है। यदि समझदार दुश्मन आपकी आलोचना भी करेगा तो वह अवश्य तर्कसंगत होगी। अत: समझदार दुश्मन का सुधारवादी दृष्टिकोण होगा, न कि अहितकारी।

किसी ने ठीक ही कहा है कि मूर्ख के साथ राज करना भी दुखदायी होता है और समझदार के साथ मुशक्कत कर जीवन यापन में भी आनंद आता है।

अत: मूर्ख मित्रों से दूर रहें और समझदार दुश्मन से निर्भय रहें। ❑

– प्रेमचंद माहिल

सफलता कैसे प्राप्त करें

❑ ऋतुराज, जांगला

ये मुमकिन नहीं कि मिले हर जगह शुष्क जमीन
प्यासे जो निकल पड़े हैं, दरिया भी मिल ही जाएगा।।

आशा ही जीवन है, मानव स्वभाव में इसे मूल मंत्र के रूप में अपनाया जाना चाहिये। हर इन्सान का एक ही सपना होता है कि उसका आने वाला कल स्वर्णिम हो। सुनहरे भविष्य की कल्पना के लिए आवश्यक है हमारी मेहनत और हमारी लगन।

असफलता क्या है– प्राय: सफलता का अर्थ समृद्धि और यश से लगाया जाता है। धन कमाना, प्रसिद्धि प्राप्त करना या सेलिब्रिटी होने को ही सफलता मान लिया जाता है, जबकि यह हकीकत नहीं है, वास्तव में सफलता तो वह है जो शांति देती है और विकार रहित व्यक्तित्व का विकास करती है। वह सफलता नहीं हो सकती जो चित को अशांत करे, परेशान करे। सफल होने के दो अर्थ हैं पहला व्यावहारिक सफलता, दूसरा समग्र सफलता। व्यावहारिक सफलता कभी स्थायी नहीं हो सकती, एक ही व्यक्ति हमेशा शीर्ष पर रहे ये सम्भव नहीं है लेकिन समग्र सफलता आपका व्यक्तित्व बदल देती है। आवश्यकता सिर्फ उत्साह एवं उमंग के साथ कार्य करने की होती है, यह सच्ची सफलता का मंत्र है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए यह अति आवश्यक है कि हम कर्म के महत्त्व को स्वीकार कर उसी पर ध्यान केन्द्रित करें। इसकी प्राप्ति का एक मात्र मार्ग सतत् कर्म ही है, इसके अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प है ही नहीं। कहा भी जाता है कि मंजिल पाने वाले कभी भी अपनी राह में नहीं रुकते, बल्कि मंजिल को उनकी तलाश रहती है। दूसरी तरफ निराशावादी व्यक्ति सफलता प्राप्त करने के लिये कोई प्रयास न करते हुए भाग्यवादी बना रहता है। जब लक्ष्य प्राप्ति के लिये हम साहस जुटाते हैं, और प्रयास करते हैं तथा सच्ची लग्न और दृढ़ विश्वास रखते हैं तो सफलता न मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता।

व्यावहारिक सफलता कभी स्थायी नहीं हो सकती, एक ही व्यक्ति हमेशा शीर्ष पर रहे ये सम्भव नहीं है लेकिन समग्र सफलता आपका व्यक्तित्व बदल देती है। आवश्यकता सिर्फ उत्साह एवं उमंग के साथ कार्य करने की होती है, यह सच्ची सफलता का मंत्र है।

जीवन में आकांक्षाओं की ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिये साहस जुटाना अति आवश्यक है, साहस बहुमत जुटाता है, साहस विजय का मार्ग है। जबकि कायरता असफलता का मार्ग। कभी–कभी मनुष्य परिस्थितियों को दोषी ठहराता है और अपने आपको असहाय पाता है लेकिन परिस्थितियां कभी असहाय नहीं होती, वह व्यक्ति ही है जो अपने अंदर निराशा के बीज प्रस्फुटित करता है और अपने आपको असहाय बना लेता है तथा उसका दोष दूसरों पर, भाग्य पर या परिस्थितियों पर मढ़ देता है। यदि हम साहसी हैं तो किसी भी विरोध का सक्षमता से मुकाबला कर सकते हैं और कठिन से कठिन बाधा को आसानी से पार कर सकते हैं। इसलिये सफलता को पाने का प्रथम सोपान साहस, सच्ची लग्न और आत्मविश्वास है।

सपने सभी को देखने चाहिये, ये प्रगति के प्रेरणा स्रोत होते हैं। लेकिन परेशानी तब होती है, जब दूसरों के दिखाए सब्जबाग को हम सपना समझ बैठते हैं। वर्तमान परिदृश्य में अधिकांश भारतीय युवा अपने स्वप्निल संसार में एक नकली संसार की परिकल्पना को संजोए बैठे हैं।

आवश्यकताओं की पूर्ति अपरिहार्य है किन्तु भौतिक सुविधाएं अनन्त हैं। हिन्दुस्तान की संस्कृति मूल्यों पर आधारित है। मूल्य ही जीवन को सकारात्मक दिशा देते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि असफलता ही सफलता का साधन है।' यदि हमें जीवन में कुछ करना है या कुछ सीखना है तो यहां पहली बार असफल होना कोई अपराध नहीं है लेकिन उसकी पुनरावृति करना अपराध है। जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को असफलता का सामना करना पड़ता है। जिसने इसका डटकर सामना किया उसी ने इस पर विजय पाई है। लगातार प्रयास हमें आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान करता है यदि हम असफल नहीं हुए तो यह अनुमान लगाना सहज है कि हमने कभी भी ऊंची आकांक्षाओं पर विजय पाने का प्रयास ही नहीं किया। यदि हम अपने आशावादी सुनहरे स्वप्नों को साकार करना चाहते हैं तो हमें दृढ़ निश्चयी होकर, कड़ी मेहनत, सच्ची लग्न एवं आत्मविश्वास से साहसपूर्वक उचित समयानुसार प्रत्येक कार्य करने होंगे। तब दुनिया की कोई भी ताकत हमारे बढ़ते हुए कदमों को नहीं रोक सकती। कहा भी गया है– 'यह कैसे हो सकता है कि कोई अपना रास्ता चुने भी और उस पर अकेला न हो। ❑

अलगाववाद से जूझ रहे जम्मू-कश्मीर के लिए सरकारी वार्ताकारों ने तैयार की है

एक अलगाववादी रपट

❑ नरेंद्र सहगल

भारत की अखण्डता, सुरक्षा और राष्ट्रीय स्वाभिमान की अनदेखी करके इन सरकारी वार्ताकारों ने अपनी रपट के माध्यम से भारत के राष्ट्रपति, संसद, संविधान, राष्ट्रध्वज और सेना के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिए हैं। देश के संवैधानिक ढांचे अर्थात एक विधान, एक निशान और एक प्रधान की मूल भावना को ही चुनौती दे दी गई है।

संसार भर में हथियारबंद आतंकवादी सप्लाई करने वाली विशेषतया कश्मीर के रास्ते से भारत में हिंसक जेहाद फैलाने के उद्देश्य से कार्यरत पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. के एजेंट गुलाम नबी फाई के हमदर्द दोस्त दिलीप पडगांवकर, वामपंथी चिंतक एम.एम.अंसारी और मैकाले परम्परा की शिक्षाविद् तथाकथित अंतर्राष्ट्रवादी राधा कुमार ने अपनी रपट में जो सिफारिशें की हैं वे सभी कश्मीर केन्द्रित राजनीतिक दलों, अलगाववादी संगठनों, आतंकी गुटों और कट्टरपंथी मजहबी जमातों द्वारा पिछले 64 वर्षों से उठाई जा रही भारत विरोधी मांगें और सरकार/सेना विरोधी लगाए जा रहे नारे हैं। (दिलीप पडगांवकर और राधा कुमार यह दोनो वार्ताकार गुलाम नबी फाई द्वारा अमेरिका में आयोजित जम्मू-कश्मीर की आजादी से संबंधित सम्मेलन में भाग लेने गए थे।)

संसार भर में हथियारबंद आतंकवादी सप्लाई करने वाली विशेषतया कश्मीर के रास्ते से भारत में हिंसक जेहाद फैलाने के उद्देश्य से कार्यरत पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. के एजेंट गुलाम नबी फाई के हमदर्द दोस्त दिलीप पडगांवकर, वामपंथी चिंतक एम.एम.अंसारी और मैकाले परम्परा की शिक्षाविद् तथाकथित अंतर्राष्ट्रवादी राधा कुमार ने अपनी रपट में जो सिफारिशें की हैं वे सभी कश्मीर केन्द्रित राजनीतिक दलों, अलगाववादी संगठनों, आतंकी गुटों और कट्टरपंथी मजहबी जमातों द्वारा पिछले 64 वर्षों से उठाई जा रही भारत विरोधी मांगें और सरकार/सेना विरोधी लगाए जा रहे नारे हैं।

स्वायत्तता, स्वशासन, आजादी, पाकिस्तान में विलय, भारतीय सेना की वापसी, सुरक्षाबलों के विशेषाधिकारों की समाप्ति, जेलों में बन्द आतंकियों की रिहाई, पाकिस्तान गए कश्मीरी आतंकी युवकों की घर वापसी, अनियंत्रित नियंत्रण रेखा और जम्मू-कश्मीर एक विवादित राज्य इत्यादि अलगाववादियों के एजेंडे को इस रपट का आधार बनाया गया है। वार्ताकारों के सुझावानुसार 1952 के बाद जम्मू-कश्मीर में लागू भारतीय संसद के सभी कानूनों की समीक्षा के लिए एक संविधानिक समिति गठित की जाएगी। जिसके निष्कर्ष पर पहले हुर्रियत कान्फ्रेंस और बाद में पाकिस्तान और पीओके के प्रतिनिधियों के साथ वार्तालाप होगा। इस तरह हमलावर पाकिस्तान, पाक अधिकृत कश्मीर और अलगाववादी संगठन हुर्रियत कान्फ्रेंस को वार्ताकारों ने कश्मीर मुद्दे पर पक्ष (स्टेक होल्डर्ज) मान लिया है।

इन सरकारी वार्ताकारों से पूछा जाना चाहिए कि चार लाख विस्थापित कश्मीरी हिन्दुओं, पाक/पाक अधिकृत कश्मीर से आए 14 लाख हिन्दु शरणार्थियों और लद्दाख के बौद्ध मतावलम्बियों को कश्मीर मुद्दे पर स्टेक होल्डर्ज क्यों नहीं माना गया। इन वार्ताकारों ने पाक अधिकृत कश्मीर को 'पाक प्रशासित जम्मू-कश्मीर' कहकर जहां पाकिस्तान के सभी गुनाह माफ कर दिए हैं वहीं पाकिस्तान के जबरन कब्जे वाले दो-तिहाई कश्मीर को पाकिस्तान का हिस्सा मान लिया है। गौरतलब है कि पाक ने पूरे कश्मीर को हड़पने के लिए भारत पर चार बार सीधे युद्ध थोपे हैं और जेहादी आतंकवाद के माध्यम से अपने मंसूबे पूरे करने में लगा हुआ है।

वार्ताकारों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट की समीक्षा करने से पहले अगर नेशनल कान्फ्रेंस, पी.डी.पी, हुर्रियत कान्फ्रेंस और अन्य अलगाववादी संगठनों के घोषित ऐजेंडों पर नजर डाली जाए तो स्पष्ट होगा कि ये रिपोर्ट इन्हीं संगठनों की मिलीभगत से तैयार हुई है।

नेशनल कान्फ्रेंस का एजेंडा : ग्रेटर एटॉनमी

- जम्मू-कश्मीर में 1953 से पहले की संवैधानिक स्थिति बहाल की जाए
- 1953 के बाद जम्मू-कश्मीर में लागू भारत के सभी कानूनों/ अध्यादेशों को समाप्त किया जाए - 1953 के पूर्व की संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार मुख्यमंत्री को वजीर-ए-आज़म और राज्यपाल को सदर-ए-रियासत कहा जाता था। -भारतीय संविधान की धारा 370 का अस्थाई चरित्र

समाप्त करके इसे स्थाई और विशेष धारा घोषित किया जाए। प्रदेशों की सरकारों को बर्खास्त करने वाली भारतीय संविधान की धारा 356 को जम्मू-कश्मीर पर लागू न किया जाए-भारत सरकार को जम्मू-कश्मीर के संबन्ध में केवल रक्षा, विदेश, संचार और मुद्रा विभागों को नियंत्रित करने का अधिकार होगा। शेष सभी मामलों पर प्रदेश सरकार का पूरा नियंत्रण होगा-भारत के राष्ट्रपति को ऐसे सभी अध्यादेश रद्द कर देने चाहिए जो जम्मू- कश्मीर से संबन्धित 1952 के दिल्ली समझौते की परिधि से बाहर हैं।

पी.डी.पी का एजेंडा : सेल्फ रूल

– सेल्फ रूल के अस्तित्व में आने पर 1953 के बाद जम्मू-कश्मीर में लागू सभी भारतीय कानून समाप्त हों – दोनों ओर के कश्मीर को बांटने वाली नियंत्रण रेखा को खत्म करके व्यापार समेत सभी प्रकार के आवागमन के रास्ते खोल दिए जाएंगे- आतंकवाद से निपटने में जुटी भारतीय सेना की वापसी होकर 'आर्म्ड फोर्सेज स्पैशल पावर एक्ट' समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार के संयुक्त कश्मीर में प्रशासनिक व्यवस्था के लिए रीजनल कौंसिलों और सब रीजनल कौंसिलों का गठन होगा – जम्मू कश्मीर में दोनों देशों भारत-पाकिस्तान की संयुक्त सेना, संयुक्त मुद्रा, रक्षा एवं विदेशी मामलों के लिए एक संयुक्त नीति बनाई जाएगी। स्पष्ट है कि पी.डी. पी. के सेल्फ रूल फॉमूले में भी एटॉनमी फॉमूले जैसी कश्मीर की मुकम्मल आजादी के बीज विद्यमान हैं।

हुर्रियत कान्फ्रेंस का एजेंडा : युनाइटेड स्टेट्स ऑफ कश्मीर

हुर्रियत कान्फ्रेंस के चेयरमैन मीर वाइज उमर फारुख द्वारा प्रस्तुत युनाइटेड स्टेट्स ऑफ कश्मीर का फार्मूला पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ द्वारा दिए गए समाधान से ज्यादा मेल खाता है। मुशर्रफ फार्मूले के अनुसार सम्पूर्ण जम्मू-कश्मीर को 7 विशेष क्षेत्रों में बांटकर भारत और पाकिस्तान का पूरी जम्मू-कश्मीर रियासत पर संयुक्त नियंत्रण होगा। भारतीय सेना की वापसी और जम्मू-कश्मीर में स्वशासन की स्थापना मुशर्रफ फार्मूले की विशेष शर्तें हैं। कुछ ले देकर इन्हीं शर्तों पर भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने मुशर्रफ के साथ समझौता कर लिया था।

हुर्रियत कान्फ्रेंस ने हालांकि इस फार्मूले से सहमति जताई है परन्तु ये भी जोड़ा है कि ये फार्मूला दोनों ओर के कश्मीरियों तथा क्षेत्रों पर लागू हो। हुर्रियत कान्फ्रेंस जम्मू, पुंछ, डोडा, कश्मीर घाटी, लद्दाख, पाक अधिकृत कश्मीर, गिलगित, बाल्टिस्तान इन सभी क्षेत्रों को एक युनाइटेड स्टेट्स ऑफ कश्मीर के अन्तर्गत लाकर आजाद मुल्क का निर्माण करने के पक्ष में है। इसी तरह अन्य अलगाववादी भी जम्मू-कश्मीर को भारत से अलग करके एक स्वतन्त्र देश के रूप में देखने के ख्वाब ले रहे हैं। ये सभी अलगाववादी नेता पाकिस्तान की मदद से व्याप्त हिंसक आतंकवाद का किसी न किसी रूप में समर्थन व मदद करते हैं। ये रपट जम्मू-कश्मीर के 80 प्रतिशत देशभक्त नागरिकों की इच्छाओं/जरूरतों की अनदेखी करके मात्र 20 प्रतिशत संदिग्ध लोगों की भारत विरोधी मांगों के आधार पर बनाई गई है। कश्मीर में सक्रिय अलगाववादी संगठन हुर्रियत कान्फ्रेंस जम्मू-कश्मीर के 22 जिलों में से मात्र 5 जिलों में ही अपना प्रभाव रखती है। अत: स्वायतता, स्वशासन, ग्रेटर कश्मीर और अलगाववादियों की सभी मांगों की समीक्षा अगर भारत सरकार द्वारा मनोनीत तीनों वार्ताकारों की रपट के सदर्भ में की जाए तो स्पष्ट होगा कि वार्ताकारों ने न केवल अलगाववादियों के आगे घुटने टेके हैं अपितु जम्मू-कश्मीर के एक आजाद मुल्क के रूप में उभरने अथवा पकिस्तान में मिल जाने की भूमिका तैयार कर दी है। ❑

इसी तरह अन्य अलगाववादी भी जम्मू-कश्मीर को भारत से अलग करके एक स्वतन्त्र देश के रूप में देखने के ख्वाब ले रहे हैं। ये सभी अलगाववादी नेता पाकिस्तान की मदद से व्याप्त हिंसक आतंकवाद का किसी न किसी रूप में समर्थन व मदद करते हैं। ये रपट जम्मू-कश्मीर के 80 प्रतिशत देशभक्त नागरिकों की इच्छाओं/जरूरतों की अनदेखी करके मात्र 20 प्रतिशत संदिग्ध लोगों की भारत विरोधी मांगों के आधार पर बनाई गई है। कश्मीर में सक्रिय अलगाववादी संगठन हुर्रियत कान्फ्रेंस जम्मू-कश्मीर के 22 जिलों में से मात्र 5 जिलों में ही अपना प्रभाव रखती है।

वार्ताकारों की अनुशंसाएं और उनका विश्लेषण

जम्मू कश्मीर के मसले पर गठित वार्ताकार दल की रिपोर्ट घोर आपत्ति जनक, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के विरुद्ध तथा प्रारंभ से कश्मीर के प्रति जारी सरकार की नीति से विचलित करने वाली है। इसे सिरे से खारिज किया जाना आवश्यक है। गृहमंत्रालय ने इस रिपोर्ट को सात महीने तक दबाये रखने के बाद अपनी वेबसाइट पर सार्वजनिक कर दिया। रिपोर्ट पर आयी प्रारंभिक टिप्पणियों ने ही साबित कर दिया कि यह देश के साथ किसी फरेब से कम नहीं है। प्रस्तुत है रिपोर्ट–

◆ राज्य की अलग पहचान की गारंटी देने वाला अनुच्छेद 370 बना रहना चाहिये। संविधाान के अनुच्छेद 370 के शीर्षक (अस्थायी) शब्द हटाकर विशेष शब्द रखा जाए। यह भारतीय संविधान का एकमात्र अनुच्छेद है जिसे संविधान निर्माताओं ने सीमित समय के लिये जोड़ा था। स्वयं शेख अब्दुल्ला संविधान सभा के सदस्य थे और उन्होंने भी इस प्रावधान पर सहमति जताते हुए हस्ताक्षर किये।

◆ नियंत्रण रेखा और अंतर्राष्ट्रीय सीमा के आर-पार जनता, साजो-समान और सेवाओं की बाधारहित आवाजाही तत्परता से सुनिश्चित की जाए। इसके लिये सीमा के दोनों ओर के प्रतिनिधियों की एक संयुक्त सलाहकार समिति एवं संयुक्त संस्थाएं बनें जो संयुक्त क्षेत्र के विकास की योजना बनाएं। इसके लिये न केवल भारत के अलगाववादी समूहों बल्कि कथित आजाद जम्मू-कश्मीर सरकार, पाकिस्तान तथा चीन सरकार को वार्ता के लिये सहमत करना होगा। आज की स्थिति में यह कल्पना के घोड़े दौड़ाने से ज्यादा कुछ नहीं है। सुझाव का अर्थ यह भी है कि भारत जम्मू-कश्मीर का मामला उसका निजी मामला है कि छह दशकों की अपनी नीति को छोड़ कर क्रमशः आजाद जम्मू-कश्मीर सरकार, पाकिस्तान और चीन की संप्रभुता स्वीकार कर अपना दावा छोड़ दे। वार्ताकारों ने अपनी रिपोर्ट में इसे सभी जगह पाक अधिकृत क्षेत्र (पीओके) के स्थान पर पाक प्रशासित क्षेत्र (पीएके) लिख कर पाकिस्तान की संप्रभुता को मान्यता भी दे दी है।

अनुच्छेद 370 केवल एक प्रक्रियात्मक तंत्र है जो राज्य को किसी प्रकार की स्वायत्तता नहीं देता। साथ ही, इस तंत्र का उपयोग कर जो कानून जम्मू-कश्मीर में लागू किये गये हैं वे शेष भारत में भी लागू हैं। यदि वे 120 करोड़ भारतीयों के हित में हैं तो जम्मू-कश्मीर के 1 करोड़ 20 लाख नागरिकों के हितों के विरुद्ध कैसे हो सकते हैं।

◆ नेहरू-शेख समझौते को आधार मान कर सन् 1952 के बाद राज्य में लागू हुए संविधान के अनुच्छेदों और सब केन्द्रीय अधिनियमों की समीक्षा के लिए संवैधानिक समिति बनाई जाए तथा अनुच्छेद 370 के अंतर्गत प्रदान स्वायत्तता को भंग करने वाले केन्द्रीय कानून वापसलिये जायें। सत्य यह है कि अनुच्छेद 370 केवल एक प्रक्रियात्मक तंत्र है जो राज्य को किसी प्रकार की स्वायत्तता नहीं देता। साथ ही, इस तंत्र का उपयोग कर जो कानून जम्मू-कश्मीर में लागू किये गये हैं वे शेष भारत में भी लागू हैं। यदि वे 120 करोड़ भारतीयों के हित में हैं तो जम्मू-कश्मीर के 1 करोड़ 20 लाख नागरिकों के हितों के विरुद्ध कैसे हो सकते हैं। यहां यह भी उल्लेख नीय है कि 1952 में शेखअब्दुल्ला की कोई वैधानिक स्थिति नहीं थी इसलिये उनके साथ हुआ कोई भी समझौता (यदि हुआ है तो भी) न तो वैधानिक रूप से उचित है और न ही बाध्यकारी है।

◆ अखिल भारतीय सेवाओं से लिए जा रहे अधिकारियों का अनुपात धीरे-धीरे कम करते हुए राज्य की सिविल सेवा से लिए जाने वाले अधिकारियों की संख्या बढ़ाई जाए। देश के सभी राज्यों में 66 प्रतिशत प्रशासनिक अधिकारी केन्द्रीय सेवा से आते हैं तथा शेष सम्बंधित राज्य से लिये जाते हैं। जम्मू-कश्मीर में यह अनुपात पहले ही 50 प्रतिशत किया जा चुका है। इसे निरंतर कम करने की सिफारिश केन्द्रीय हस्तक्षेप को पूरी तरह समाप्त करने का प्रयास है। इसका अर्थ यह है कि केन्द्र केवल अनुदान देगा किन्तु केन्द्रीय अधिकारियों के अभाव में उसके वितरण में जवाबदेही नहीं तय कर सकेगा।

◆ गवर्नर और मुख्यमंत्री पद के लिये उर्दू पर्यायवाची शब्दों का इस्तेमाल किए जाएं जो क्रमशः सदरे-रियासत और वजीरे-आजम होता है। दूसरे शब्दों में यह 1952 के पहले की स्थिति बहाल करने का ही प्रयास है जिसके विरुद्ध स्व. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने आंदोलन किया और बलिदान दिया।

राज्यपाल की नियुक्ति के लिये राज्य सरकार राष्ट्रपति को तीन नाम भेजेगी। राष्ट्रपति इनमें से किसी एक को राज्यपाल नियुक्त कर सकेंगे। संघीय संविधान के अनुसार राज्यपाल किसी राज्य में राष्ट्रपति का प्रतिनिधि होता है। राज्य सरकार द्वारा राज्यपाल का चयन न केवल संविधान विरुद्ध है अपितु राष्ट्रपति के अधिकारों को ही नकारने वाला है, जिसे नियुक्त करने अथवा बदलने का अधिकार राष्ट्रपति को नहीं हैए ऐसा व्यक्ति राष्ट्रपति का प्रतिनिधि कैसे माना जा सकता है।

◆ संसद राज्य के लिये की कानून तब तक नहीं बनाएगी जब तक कि देश की आंतरिक-बाह्य सुरक्षा अथवा महत्वपूर्ण आर्थिक हित प्रभावित न हो रहे हों। भारत का संविधान संसद को जम्मू-कश्मीर सहित किसी भी राज्य के लिये केन्द्रीय सूची के किसी भी विषय पर कानून बनाने तथा उसमें संशोधन करने के लिये अधिकृत करता है। संसद के इस अधिकार को चुनौती देने का हक संघ के किसी राज्य को नहीं है।

◆ दक्षिण और मध्य एशिया के बीच जम्मू-कश्मीर एक सेतु है, यह स्थापित करने के लिये आवश्यक उचित उपाय किये जायें। यह टिप्पणी अत्यंत आपत्तिजनक है। जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और इस रूप में वह मध्य एशिया के लिये भारत का द्वार है। इसे दो भू-भागों को जोड़ने वाला सेतु कह कर भारत से पृथक् उसकी सत्ता को स्थापित करने का प्रयास निंदनीय है।

◆ सेना को आवासीय तथा कृषि क्षेत्रों से हटाया जाए तथा बैरक में वापस भेजा जाए। अशांत क्षेत्र (डीए) का दर्जा हटाया जाए, जनसुरक्षा अधिनियम (पीएसए) में संशोधन किया जाए तथा सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम (अफस्पा) को वापस लिया जाए। सेना व सशस्त्र बलों के प्रयास, जिनमें पांच हजार से अधिक सैनिकों का बलिदान भी शामिल है, से राज्य की स्थितियों में सुधार दिखाई देने लगा है। यह शांति राज्य का स्थायी तत्व बन जाए, इससे पूर्व राजनैतिक कारणों से सेना को हटाने अथवा उसे विशेषाधिकार प्रदान करने वाले अधिनियमों को वापस लेना खतरनाक दांव है। छोटी सी चूक भी शांति की ओर बढ़ रहे राज्य को पुनः हिंसा के दौर में धकेल सकती है।

सेना व सशस्त्र बलों के प्रयास, जिनमें पांच हजार से अधिक सैनिकों का बलिदान भी शामिल है, से राज्य की स्थितियों में सुधार दिखाई देने लगा है। यह शांति राज्य का स्थायी तत्व बन जाए, इससे पूर्व राजनैतिक कारणों से सेना को हटाने अथवा उसे विशेषाधिकार प्रदान करने वाले अधिनियमों को वापस लेना खतरनाक दांव है।

◆ नियंत्रण रेखा के आर-पार सभी मार्गों को खोला जाए, व्यापार हेतु ही नहीं, अपितु नागरिक आवाजाही के लिये भी बहु-प्रवेश परमिट जारी किये जाएं, सीमा के आर-पार रेल लाईनों और सड़क परियोजनाओं को पूरा करने में तेजी लायी जाए तथा नियंत्रण रेखा के दोनों ओर पर्यटन को बढ़ावा दिया जाए। व्यापार और पर्यटन के नाम पर सीमा के दोनों ओर मुक्त आवाजाही होने पर पाकिस्तान प्रेरित आतंकवादियों के कश्मीर में प्रवेश का मार्ग सुगम हो जाएगा। करोड़ों की लागत से सीमा पर लगायी गयी बाड़ का प्रयोजन ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही सीमा पार से प्रवेश कर आतंकी बेरोक-टोक जम्मू होते हुए पंजाब तथा देश के शेष भागों में जा सकते हैं।

◆ जितना शीघ्र हो सके भारत सरकार और हुर्रियत के बीच संवाद आरंभ किया जाए और इसे अबाधित रखा जाए। भारत सरकार-हुर्रियत के संवाद से उभरे बिन्दुओं पर संवाद के लिए पाकिस्तान और पाकिस्तान नियंत्रित जम्मू और कश्मीर सरकार को तैयार करना चाहिए। जिस हुर्रियत ने वार्ताकारों से मिलना भी स्वीकार नहीं किया उनके साथ भारत सरकार की वार्ता शुरू करने का सुझाव ही निरर्थक है। इसी प्रकार, पाकिस्तान को वार्ता में शामिल करने का अर्थ भारत सरकार द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ सहित तमाम अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लिये गए अपने पक्ष से विचलित होना है जबकि उसकी ओर से आज भी अवैध कब्जे को खाली करने के का कोई संकेत नहीं दिया गया है।

◆ पत्थर मारने वालों और राजनीतिक बंदियों को रिहा किया जायए जो आतंकवादी हिंसा छोड़ने को तैयार हों उन्हें क्षमा किया जाए, हथियार चलाने का प्रशिक्षण लेने नियंत्रण रेखा के पार गए कश्मीरियों की वापसी सुनिश्चित हो तथा उक्त सभी का पुनर्वास किया जाए। यह सुझाव वार्ताकारों के अपने सुझाव नहीं हैं। अलगाववादी हुर्रियत कान्फ्रेंस के विभिन्न धड़ों द्वारा की गयी उक्त मांगों को वार्ताकारों ने ज्यों-त्यों अपनी सिफारिशो में रख दिया है। ❑

कश्मीरी रिपोर्ट राष्ट्रद्रोहियों के वकीलपत्र समान

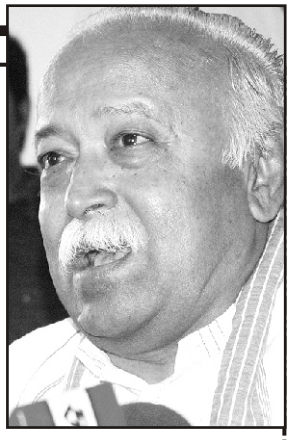

रिपोर्ट में राष्ट्रद्रोही लोगों की ही भाषा बोली गई है।

पाकव्याप्त कश्मीर फिर भारत सें कैसे जोड़ना, केवल यही समस्या है, इस संदर्भ का प्रस्ताव भारत की संसद ने एकमत से पारित किया है, फिर भी भारत सरकार द्वारा नियुक्त किए वार्ताकारों की रिपोर्ट राष्ट्रद्रोहियों का ही वकीलपत्र लेने वाली है। इस बारे में सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत ने सखेद आश्चर्य व्यक्त किया। डॉ. भागवत ने कहा कि हिंदुत्व की भावना और तद्नुसार आचरण न रखने वाले लोग ही स्वतंत्रता के बाद देश के रणनीतिकार बने इस कारण ही आज 66 वर्ष बाद भी 'गुलाम कश्मीर' भारत में वापस नहीं आ सका। भारत के विभाजन के लिए भी इसी मनोवृत्ति के नेताओं की करनी कारण बनी, ऐसा आरोप भी उन्होंने लगाया।

सरकार नियुक्त वार्ताकारों की रिपोर्ट में कश्मीर का चरित्र द्विधा है, ऐसा मान्य किया गया है। कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली धारा 370 का 'अस्थायी' (टेम्पररी) विशेषण हटाकर उसके बदले 'विशेष' (स्पेशल) विशेषण लगाने की सिफारिश इसमें की गई है। पाकव्याप्त कश्मीर के बदले पाकशासित कश्मीर नामावली इस रिपोर्ट में प्रयोग की गई है। यह सब देखकर ऐसा लगता है कि इस रिपोर्ट में राष्ट्रद्रोही लोगों की ही भाषा बोली गई है। इस समिति को निवेदन देने वाली अधिकांश संस्थाओं के लोगों ने कश्मीर में भारत का संविधान लागू करने की ही मांग की है। लेकिन उनकी मांग को इस रिपोर्ट में स्थान ही नहीं दिया गया और विघटनवादी शक्तियों की मांगों का अप्रत्यक्ष रूप में समर्थन किया गया है, ऐसा ध्यान में आता है। ❑

आतंकवाद चिंता का विषय

ऊना में 20 दिवसीय प्रथम वर्ष शिविर सम्पन्न

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का 20 दिवसीय प्रथम वर्ष शिविर का समापन डीएवी स्कूल ऊना में हुआ। शिविर में हिमाचल, पंजाब व हरियाणा से भी स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। इससे पहले यहां प्राथमिक संघ शिक्षा वर्ग का भी आयोजन किया गया। दोनों शिविरों में कुल 165 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संघ के 20 दिवसीय प्रथम वर्ष शिविर का 24 जून को आरम्भ हुआ था। प्रथम वर्ष के शिविर के समापन अवसर पर मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख सुरेश चंद्र ने सम्बोधित किया।

उन्होंने कहा कि आतंकवाद विश्व के लिये बहुत बड़ी चिंता बन गया है। इस आतंकवाद से डर कर पीछे हटने के स्थान पर इससे सख्ती से निपटने के लिये नीति बनाई जानी चाहिये। स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए सुरेश चंद्र ने कहा कि आतंकवाद देश के विकास में बाधक है। वहीं सरकार की गलत नीतियां जहां आतंकवादियों के हौसले बढ़ाती हैं, वहीं सुरक्षा कर्मियों का मनोबल भी गिराता है, ऐसे में किसी भी तरह के आतंकवाद से निपटने के लिये स्पष्ट नीति होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि देश में जब-जब संकट व प्राकृतिक आपदा आई है स्वयंसेवकों ने अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए आपदा प्रबंधन में दिन-रात एक कर काम किया है। उन्होंने कहा कि चाहे श्रीनगर में 400 स्वयंसेवकों द्वारा हवाई अड्डा निर्माण में योगदान देने की बात हो या सुनामी के कहर के बाद बेघर हुए लोगों के पुनर्वास की बात हो या फिर पाकिस्तान या चीन से लड़ाई का मैदान हो, स्वयंसेवक कभी भी पीछे नहीं हटे हैं।

उन्होंने कहा कि आरएसएस का नाम एक देश भक्त संगठन के रूप में लिया जाता है जबकि कुछ लोग अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये संघ पर दोषारोपण करते हैं, जिसमें कोई सच्चाई नहीं होती है। उन्होंने कहा कि हिन्दू विचारधारा देश व विश्व के कल्याण के लिये है। संघ की दैनिक शाखाएं भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी लगाई जाती हैं, जिसमें बच्चे, नौजवान, बुजुर्ग आते हैं और उन्हें भारतीय संस्कार देने के साथ-साथ शरीर को स्वस्थ रख ईमानदारी से अपने-अपने क्षेत्र में कार्य करने की सीख दी जाती है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कर्नल कुलभूषण ने कहा कि आर.एस.एस. भारत की सेवा करने वाला संगठन है। उन्होंने कहा कि संघ के साथ प्रत्येक व्यक्ति को जोड़कर देश की प्रगति के लिये काम करना चाहिये। ❑

भारत-श्रीलंका सम्बंधों पर चर्चा

दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में इंडिया फाउंडेशन द्वारा गत दिनों 'भारत-श्रीलंका सम्बंध और नई चुनौतियां' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई थी। जनता पार्टी के अध्यक्ष डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारत और श्रीलंका के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सम्बंध हैं। रावण पर विजय प्राप्त करने के बाद श्रीराम ने विभीषण को श्रीलंका का राजा नियुक्त किया था। इतना ही नहीं, वैज्ञानिक रपट में भी यह बात साबित हो चुकी है कि भारत और श्रीलंका के लोगों का डीएनए एक ही है। इसलिये भारत सरकार को श्रीलंका के आम तमिलों की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिये, लिट्टे की समस्याओं पर नहीं। उन्होंने कहा कि अगर श्रीलंका से हमारे सबंध खराब हुए तो एक और पड़ोसी राष्ट्र हमारा शत्रु बन जाएगा, जिसका फायदा चीन और पाकिस्तान उठाएंगे। तमिलों का मुद्दा स्थानीय महत्त्व का मुद्दा है और स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रीय महत्त्व के विषयों पर हावी नहीं होने देना चाहिये। वैसे भी वर्तमान सरकार के कार्यकाल में सभी पड़ोसी राष्ट्र हमारे शत्रु बनते जा रहे हैं, जोकि सरकार की बड़ी विफलता है।

वैज्ञानिक रपट में भी यह बात साबित हो चुकी है कि भारत और श्रीलंका के लोगों का डीएनए एक ही है। इसलिये भारत सरकार को श्रीलंका के आम तमिलों की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिये, लिट्टे की समस्याओं पर नहीं। उन्होंने कहा कि अगर श्रीलंका से हमारे सबंध खराब हुए तो एक और पड़ोसी राष्ट्र हमारा शत्रु बन जाएगा, जिसका फायदा चीन और पाकिस्तान उठाएंगे।

राज्यसभा सांसद श्री बलबीर पुंज ने कहा कि श्रीलंका की संसद में विभीषण की प्रतिमा स्थापित है, जिन्हें वो अपना पहला राजा मानते हैं, वहां के लोगों को हिन्दी की ज्यादा समझ नहीं है, फिर भी वे हिन्दी फिल्में देखते हैं और हिन्दी संगीत सुनते हैं। भगवान बुद्ध के अनुयायी होने के कारण वे भारत की ओर बड़े श्रद्धा भाव से देखते हैं। उन्होंने कहा कि तमिल और सिंहली बिल्कुल अलग-थलग रहते हैं। हमने श्रीलंका में तमिलों के विभिन्न गुटों से बात की, वे सब एक अखण्ड और अविभाजित श्रीलंका चाहते हैं।

वरिष्ठ कम्युनिस्ट नेता श्री डी. राजा ने कहा कि श्रीलंका सिंहलियों की भूमि है। तमिल वहां रह सकते हैं, लेकिन शासन नहीं कर सकते। आज श्रीलंका में तमिलों के सारे स्मारक नष्ट किये जा रहे हैं। अब यह आतंक विरोधी अभियान न होकर तमिल विरोधी अभियान में बदलता जा रहा है। कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमन ने किया। इसमें रा.स्व.संघ के अ.भा. सह सम्पर्क प्रमुख श्री राममाधव, राज्यसभा सांसद श्री चंदन मित्रा, श्री तरुण विजय, आर्गनाइजर साप्ताहिक के सम्पादक डॉ. आर. बालाशंकर सहित राजधानी दिल्ली के अनेक प्रबुद्ध नागरिकों ने भाग लिया। ❑

युवाओं में संघ का आकर्षण

भारतीय युवाओं में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति लगाव भी बढ़ रहा है और दूसरे शब्दों में कहें तो संघ युवा होता जा रहा है। पिछले वर्ष देश के विभिन्न प्रांतों में 7322 स्थानों से आए 11507 युवकों ने प्रथम वर्ष 2102 स्थानों से आए 2781 युवकों ने द्वितीय वर्ष 675 स्थानों से आए 732 युवकों ने तृतीय वर्ष तथा 474 लोगों ने तृतीय वर्ष (विशेष) में हिस्सा लिया।

इसके अतिरिक्त प्राथमिक शिक्षा वर्गों में हजारों कि संख्या में युवा आए। इन युवाओं में मैडिकल, इंजीनियरिंग, आईटी मैनेजमेंट, अध्यापन, मीडिया, शोध सहित सभी विषयों के विद्यार्थी, व्यवसायी शामिल थे। उल्लेखनीय है कि बी.बी.सी. लंदन की घोषणा के अनुसार दुनिया के सबसे बड़े सामाजिक व सांस्कृतिक संगठन होने का गौरव प्राप्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में बड़ी संख्या में युवा प्रचारक, विस्तारक पूर्णकालिक कार्यकर्ता, विद्यार्थी विस्तारक के रूप में संघ के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान ढाल रहे हैं और पूरी दुनिया में हिन्दुत्व की अलख जगा रहे हैं। देश में संघ की प्रेरणा से डेढ़ लाख से भी अधिक सेवाकार्य चल रहे हैं। ❑

नहाने लायक भी नहीं बचा ब्यास नदी का पानी

देवभूमि हिमाचल के कुल्लू-मनाली से लेकर पंजाब और पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान तक की जमीं को तर करने वाली ब्यास नदी का पवित्र कहे जाने वाला पानी नहाने लायक भी नहीं रहा। लगातार बढ़ते प्रदूषण की मार ने इस नदी की पवित्रता के साथ-साथ सुन्दरता पर भी ग्रहण लगा दिया है। पवित्र जल और शारीरिक रोगों का नाश करने वाली ब्यास नदी आज अपने वजूद को तरसने लगी है। यदि ब्यास नदी के जल प्रदूषण की रफ्तार यूं ही जारी रही तो आने वाले समय में यह नदी अपने धार्मिक और औषधीय गुणों के वजूद को तरसेगी। बोर्ड के सैम्पलों में ही खुलासा हुआ है कि इस नदी का पानी उद्गम स्रोत से मात्र 40-50 किलोमीटर के अन्दर ही सी ग्रेड बन गया है। जिससे हम पीने की बात तो दूर नहाने के लिये भी इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं। रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि ब्यास नदी के पानी में कोलीफार्म की मात्रा अत्याधिक हो गई है। लिहाजा 470 किलोमीटर लम्बाई वाली इस नदी के वजूद खतरे में है।

जीबी पंथ रिसर्च केंद्र मौहल की एक रिपोर्ट के मुताबिक ब्यास नदी के उद्गम स्रोत ब्यास कुंड से कुछ ही दूरी पर स्थित पर्यटन नगरी मनाली में पर्यटन सीजन के दौरान इस नदी में प्रतिदिन 60 क्विंटल गंदगी प्रवाहित की जा रही है। इससे प्रदूषण की गति लगातार तेजी से बढ़ रही है। मनाली में ही इस रफ्तार से प्रदूषण बढ़ रहा है। तो इसके बाद निचले क्षेत्रों की स्थिति क्या होगी।

जीबी पंथ रिसर्च केंद्र मौहल की एक रिपोर्ट के मुताबिक ब्यास नदी के उद्गम स्रोत ब्यास कुंड से कुछ ही दूरी पर स्थित पर्यटन नगरी मनाली में पर्यटन सीजन के दौरान इस नदी में प्रतिदिन 60 क्विंटल गंदगी प्रवाहित की जा रही है। इससे प्रदूषण की गति लगातार तेजी से बढ़ रही है। मनाली में ही इस रफ्तार से प्रदूषण बढ़ रहा है। तो इसके बाद निचले क्षेत्रों की स्थिति क्या होगी।

ब्यास नदी का दूषित होने का एक कारण ब्यास नदी में प्रवाहित किया जाने वाला कूड़ा है तो दूसरा सबसे बड़ा कारण पनविद्युत परियोजनाएं भी हैं। जिला में ब्यास की सहायक नदियों पर परियोजनाएं स्थापित की गई हैं लेकिन उन परियोजनाओं में न तो डंपिंग की उचित व्यवस्था है और न ही टनलों से निकलने वाले द्रव्य को ठिकाने लगाने के कोई ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। इस ब्यास नदी का प्रदूषण इसी रफ्तार से बढ़ता रहा तो आने वाले समय में इस नदी का पानी सिंचाई करने के काम भी नहीं आएगा। राय के अनुसार मंडी के पास इसकी खतरनाक स्थिति हो गई है जबकि इससे आगे नादौन क्षेत्र में तो स्थिति और भी भयानक हो गई है। ❑

जनकवि थे पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम

हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी के तत्वावधान में 11 जुलाई को धर्मशाला में राज्यस्तरीय पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में लेखक गोष्ठी तथा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

उपायुक्त कांगड़ा के.आर. भारती ने साहित्य समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि पहाड़ी गांधी ने अंग्रेज शासकों के खिलाफ विद्रोह के गीतों के साथ आम जनता के दुख-दर्द को भी अपनी कविताओं में व्यक्त किया। बाबा कांशी राम धर्मशाला के जेल में भी दो साल तक बंदी रहे थे।

अकादमी के सचिव डॉ. तुलसी रमण ने कहा कि पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम एक जन कवि थे। उन्होंने लोक भाषा की कविता के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को पहाड़ों में फैलाया। ❑

कर्मचारियों को टाईम स्केल की घोषणा

हिमाचल प्रदेश सरकार के कर्मचारियों को 4-9-14 का टाईम स्केल मिलेगा। मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने आज यहां उनकी अध्यक्षता में आयोजित संयुक्त सलाहकार समिति (जेसीसी) की बैठक में यह घोषणा की। इससे कर्मचारियों की लम्बे समय से चली आ रही मांग पूरी हुई है और इस निर्णय के साथ मुख्यमंत्री द्वारा इस अवसर पर की गई विभिन्न घोषणाओं से प्रदेश के विभिन्न विभागों, बोर्डों एवं निगमों के 3.37 लाख नियमित, अनुबंधित, अशंकालिक और दैनिक भोगी कर्मचारी लाभान्वित होंगे। ❑

हिमाचल में गुटखा खैनी पर प्रतिबंध 2 अक्तूबर से

हिमाचल प्रदेश सरकार ने देश के चुनिंदा राज्यों की तर्ज पर गुटखा, पान मसाला, मशेहरी, खैनी के भंडारण, विक्रय और वितरण को प्रदेश में अवैध घोषित कर दिया है। उत्पादन और विक्रय में संलिप्त कोई व्यक्ति पाया जाएगा तो उसके विरुद्ध, खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम-2006 के प्रावधानों के अंतर्गत कार्रवाई की जाएगी। ऐसे खाद्य व्यापारियों को न ही पंजीकृत किया जाएगा और न ही उन्हें इसके लिये लाईसेंस जारी किये जाएंगे।

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने घोषणा की है कि 2 अक्तूबर, 2012 के बाद प्रदेश में गुटका व अन्य तम्बाकू उत्पादों के विक्रय और उसके स्टॉक को रखने पर पूर्ण प्रतिबन्ध होगा। प्रो. धूमल ने कहा कि युवा वर्ग को तम्बाकू उत्पाद बेचने पर कड़ी नजर रखी जा रही है।

हिमाचल प्रदेश में पहले ही सार्वजनिक स्थलों में धूम्रपान निषेध है और उल्लंघनकर्ता पर जुर्माने का प्रावधान किया गया है। हिमाचल प्रदेश में इस प्रकार के कदम की जरूरत अर्से से महसूस की जा रही थी। प्रदेश में शिक्षण संस्थानों के 100 गज के दायरे में तम्बाकू बेचना भी प्रतिबंधित है। 2012 में ही हिमाचल प्रदेश को विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से सर्वश्रेष्ठ तम्बाकू नियंत्रण पुरस्कार भी मिल चुका है। राज्य में इस तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंध इसलिये भी जरूरी था क्योंकि यहां कुछ संस्थाओं की सर्वेक्षण रपटों में यह साफ हो रहा था कि सभी आयु वर्ग और खासतौर पर किशोरों में इन उत्पादों की लत बढ़ रही है।

पलभर का आनंद, जिन्दगी भर का रोना

- तम्बाकू जनित कैंसर के मामले में दुनिया में भारत शीर्ष पर
- पुरुषों तथा महिलाओं में क्रमश: 56.4 प्रतिशत तथा 44.9 प्रतिशत कैंसर का कारण तम्बाकू होता है।
- मुंह के कैंसर से हर साल 75-80 हजार नए मामले सामने आते हैं। मुंह के कैंसर के 90 प्रतिशत मामले खैनी और गुटखा से होते हैं।
- तम्बाकू से सम्बद्ध बीमारियों के इलाज पर सरकारी और निजी तौर पर करीब 300 अरब रुपये हर साल खर्च किये जाते हैं। यह बजट का एक चौथाई है।

With best compliments from

MACLEODS

Macleods Pharmaceuticals Ltd.
Vill.- Theda, Khasuni lodhi Majra Rd,
Tehsil- Nalagarh, Distt. Solan,
Himachal Pradesh-174101
Tel No. 01795-661400

With best compliments from

Ambuja Cement

अमेरिकी संशोधकों ने लगाई सरस्वती नदी के अस्तित्व पर मोहर

एक नए अध्ययन में दावा किया गया है कि करीब चार हजार साल पुरानी सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के पीछे का मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन हो सकता है। इस नए अध्ययन में हिन्दू मान्यता की पवित्र नदी सरस्वती के स्रोत और अस्तित्व को लेकर लम्बे समय से जारी बहस को सुलझाने का भी दावा किया गया है।

इस अध्ययन में पुरातत्व विभाग और अत्याधुनिक भू-विज्ञान तकनीकों से जुड़े नए आंकड़े भी पेश किये गए हैं। इसमें कहा गया है कि मॉनसून बारिश में आई कमी नदी के प्रवाह को कमजोर करने का कारण बनी जिसने हड़प्पा संस्कृति के विकास और पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हड़प्पा संस्कृति अपने कृषि कार्यों के लिये पूरी तरह से नदी के प्रवाह पर निर्भर थी।

पुरातत्व और भौगोलिक सबूत दर्शाते हैं कि सरस्वती नदी में पानी हिमालय से नहीं आता था बल्कि यह मॉनसून की बारिश से सिंचित थी और जलवायु परिवर्तन से यह खास मौसम में बहने वाली नदी बन गई। करीब 3,900 वर्ष पूर्व नदियां सूख रही थीं और हड़प्पा संस्कृति के लोग पूर्व की ओर गंगा घाटी क्षेत्र की तरफ चले गए जहां मॉनसून विश्वसनीय बना रहा। ❑

भारत-रूस तैयार करेंगे हाइपरसोनिक मिसाइल

भारत और रूस हाइपरसोनिक मिसाइल का परीक्षण करने वाले दुनिया के प्रथम राष्ट्रों में एक हो सकते हैं। क्रूज मिसाइल का हाइपरसोनिक ब्रह्मोस संस्करण वर्ष 2017 में परीक्षण के लिये तैयार हो जाएगा। ये मिसाइलें केवल भारत और रूस को मिलेंगी और किसी अन्य देश को इसकी आपूर्ति नहीं की जाएगी। इस परीक्षण के बाद भारत और रूस अमरीका के करीब पहुंच गए हैं जिसने पिछले साल उस मिसाइल का सफल परीक्षण करने का दावा किया था। ❑

महालक्ष्मी मंदिर से मिला करोड़ों का सोना

केरल के मंदिर के बाद महाराष्ट्र के कोल्हापुर के महालक्ष्मी मंदिर के खजाने ने सबको हैरत में डाल दिया है। करीब 900 साल पुराने इस मंदिर में पहले ही दिन सोने के ऐसे गहने निकले हैं, जिनकी बाजार में कीमत करोड़ों में है। इसके अलावा अन्य बेशुमार सम्पत्तियां मिली हैं।

इस मंदिर से अब तक सोने के बेशकीमती गहने मिले हैं। इनमें महालक्ष्मी का मुकुट, सोने के हार, चंद्रहार, श्रीयंत्र हार, सोने के घुंघरू, 49 मोहरों वाली स्वर्ण माला, तलवार और हीरों की कई मालाएं शामिल हैं। मंदिर का खजाना इतना बड़ा है कि इसकी गिनती 17 जून तक जारी रहेगी। मंदिर में सुरक्षा के पुख्ता बंदोबस्त किए गए हैं। पूरे मंदिर में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। खजाने की गिनती के बाद गहनों का बीमा करवाया जाएगा। इतिहासकारों के मुताबिक कोल्हापुर के महालक्ष्मी मंदिर में कोंकण के राजाओं, चालुक्य राजाओं, आदिल शाह, शिवाजी और उनकी माँ जीजाबाई तक ने चढ़ावा चढ़ाया है। इस मंदिर को 7वीं शताब्दी में चालुक्य राजाओं ने बनवाया था। यह मंदिर 27 हजार वर्गफुट में फैला है। मंदिर 51 शक्तिपीठों में शुमार है। आदि शंकराचार्य ने महालक्ष्मी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की थी। ❑

भारतीय पर्यावरण के प्रति सबसे अधिक जागरूक

भारत में उपभोक्तावाद के बढ़ते रुझान के बावजूद भारतीय उपभोक्ता अपने पर्यावरण और परिवेश के प्रति जागरूकता के मामले में दुनिया में सबसे अव्वल हैं जबकि दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था अमरीका के उपभोक्ता फिसड्डी हैं। अमरीका की प्रतिष्ठित नैशनल जियोग्राफिकल सोसायटी की ओर से दुनिया के 17 देशों में उपभोक्ता व्यवहार को आंकने के लिये कराए गए सर्वे में उभरती हुई अर्थव्यवस्था वाले देशों भारत, चीन और ब्राजील के उपभोक्ता पर्यावरण के प्रति सबसे अधिक जागरूक पाए गए। उपभोक्ता व्यवहार आंकने के लिये बनाई गई 'ग्रीनडेक्स' सूची में भारत 58.9 अंकों के साथ पहले स्थान पर है जबकि चीन 57.8 अंक के साथ दूसरे और ब्राजील 55.5 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर है। 17 देशों की इस सूची में अमरीका 44.7 अंकों के साथ सबसे नीचे है।

सर्वे में भारतीय उपभोक्ताओं की प्रशंसा करते हुए कहा गया कि यद्यपि उनके कारण प्रति व्यक्ति पर्यावरण क्षति बहुत कम है फिर भी वे इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि उनके उपयोग के कारण कहीं पर्यावरण को नुकसान तो नहीं पहुंच रहा। ❑

इस युग के हनुमान दारा अब नहीं रहे

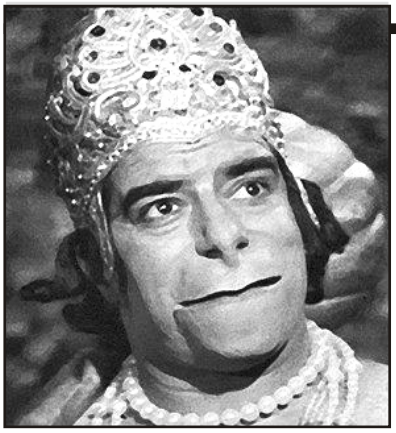

कुश्ती के मैदान से लेकर फिल्मी पर्दे पर अपना लोहा मनवा चुके भारत के रुस्तम-ए-हिन्द दारा सिंह जिन्दगी की लड़ाई हार गए हैं। 12 जुलाई को उनका देहांत हो गया। विलक्षण अभिनय प्रतिभा एवं फौलादी शरीर के धनी के देहावसान पर पूरा देश शोक ग्रस्त है। दारा सिंह रंधावा का जन्म 19 नवम्बर, 1928 को अमृतसर के गांव धरमू चक में बलवंत कौर और सूरत सिंह रंधावा के घर हुआ था। कम आयु में ही घर वालों ने उनकी मर्जी के बिना उनसे आयु में बहुत बड़ी लड़की से शादी कर दी।

दारा सिंह का दिल फूल जैसा कोमल था। और वह किसी अपने तो क्या दुश्मन को भी कभी चोट नहीं पहुंचाना चाहते थे। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने कभी अपने दुश्मन के साथ लिहाज भी नहीं किया।

उन्होंने अपनी पसंद से दूसरा और असली विवाह सुरजीत कौर नामक एक एम.ए. पास लड़की से किया। दारा सिंह के भरे-पूरे परिवार में 3 बेटियां और 2 बेटे हैं। 1947 में दारा सिंह सिंगापुर चले गए। वहां उन्होंने भारतीय स्टाइल की कुश्ती में मलेशियाई चैम्पियन तरलोक सिंह को पराजित कर कुआलालम्पुर में मलेशियाई कुश्ती चैम्पियनशिप जीती। उसके बाद उनका विजयी रथ अन्य देशों की ओर चल पड़ा और एक पेशेवर पहलवान के रूप में सभी देशों में अपनी धाक जमाकर वह 1952 में भारत लौट आए। भारत आकर सन् 1954 में वह भारतीय कुश्ती चैम्पियन बने। उन्होंने कॉमनवैल्थ देशों का दौरा किया।

फौलाद जैसे बलिष्ठ शरीर के मालिक दारा सिंह का दिल फूल जैसा कोमल था। और वह किसी अपने तो क्या दुश्मन को भी कभी चोट नहीं पहुंचाना चाहते थे। लेकिन इसके बावजूद उन्होंने कभी अपने दुश्मन के साथ लिहाज भी नहीं किया। उनका सबसे प्रसिद्ध मुकाबला ऑस्ट्रेलिया के विश्व चैम्पियन किंग कांग के विरुद्ध माना जाता है। उसने विश्व चैम्पियन का खिताब हारने के बाद दारा सिंह को चुनौती दी थी जिसे दारा सिंह ने स्वीकार कर लिया था। मुकाबले के समय दारा सिंह ने किंग कांग को दोनों हाथों से ऊपर उठाकर रिंग से बाहर फेंक दिया था।

उन्होंने 1959 में कलकत्ता में हुई कॉमनवैल्थ कुश्ती चैम्पियनशिप में कनाडा के चैम्पियन जार्ज गार्डियान्को एवं न्यूजीलैंड के जॉन डिसिल्वा को धूल चटाकर यह चैम्पियनशिप भी अपने नाम कर ली। अमरीका के विश्व चैम्पियन लाऊ थेज को 29 मई, 1968 को पराजित कर फ्री स्टाइल कुश्ती के विश्व चैम्पियन बन गए। 1983 में उन्होंने अपराजय पहलवान के रूप में कुश्ती से संन्यास ले लिया।

कुश्ती के कैरियर खत्म होने से पहले ही दारा सिंह बॉलीवुड के सफर पर निकल पड़े। 1952 में वतन वापसी के बाद दारा सिंह को पहली फिल्म मिली 'संगदिल'। फिर 1962 में आई फिल्म 'किंग कांग।' दारा सिंह ने 100 से ज्यादा फिल्मों में काम किया लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा शोहरत टीवी सीरियल रामायण से मिली। इस सीरियल में उन्होंने हनुमान का किरदार निभाया। इसकी वजह से दारा सिंह को देखते ही लोगों के जेहन में आज भी जो पहलवान अक्स उभरता है वह बजरंगबली का ही होता है। ❑

स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर बन रही है फिल्म

रामकृष्ण मिशन के संस्थापक और सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाले वेदांत के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु के जीवन और उनके विचारों को आम जन तक पहुंचाने के मकसद से फिल्म निर्देशक टूटू दास युवा विवेकानन्द से सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ प्रचारक बनने की कहानी 'द लाइट-विवेकानंद' को सिल्वर स्क्रीन पर लाने जा रहे हैं।

फिल्म की शूटिंग के लिये शहर के ऐतिहासिक टाउन हॉल को शिकागो के आर्ट इंस्टीट्यूट का रूप दिया गया है जहां विवेकानंद ने 1893 में अपना प्रख्यात भाषण दिया था। दास का कहना है कि इसे बांग्ला और हिन्दी में फिल्माया जाएगा। लेकिन निर्माता इसे 18 अन्य भाषाओं में डब करने की योजना बना रहे हैं। ❑

घूमती कलम

गाड पार्टिकल-हिग्स बोसोन

❑ सुभाष चंद्र सूद

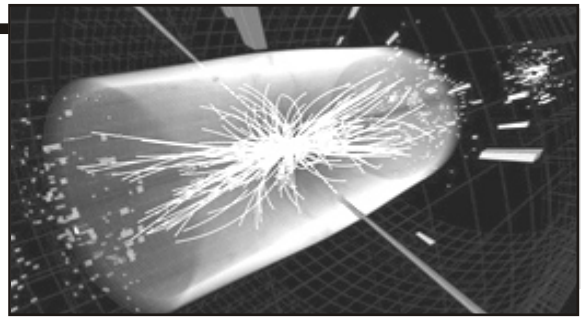

जेनेवा स्थित सर्न द्वारा हाल ही में गार्ड पार्टिकल (हिग्स बोसोन) की खोज से पूरी दुनिया रोमांचित है। इन्हीं कणों को ईश्वरीय कण, ब्रह्म कण या फिर देव कणों के अलग-अलग नामों से सम्बोधित किया जा रहा है। **इस खुशखबरी से सबसे ज्यादा आनंदपूर्ण गौरव का एहसास भारतीय सभ्यता को है। इस खोज ने सदियों से प्रचलित भारतीय वैदिक मान्यता और दर्शन की वैज्ञानिक पुष्टि की है जो कहती है कि कण कण में भगवान विराजमान है। गार्ड पार्टिकल की खोज से मूल सवाल के साथ ही दर्शन की यह रहस्यमय गुत्थी भी लगभग सुलझती नजर आ रही है। महाविस्फोट (बिग बैंग) के बाद ब्रह्मांड का निर्माण हुआ।** इस दौरान एक ही तत्व का प्रभाव बाकी सब पर चढ़ गया। ये और कुछ नहीं सम्भवत: सूक्ष्म बोसोन कण ही थे। इन्हीं बोसोन कणों के कारण सभी वस्तुओं में भार आया जो परस्पर क्रिया प्रतिक्रिया बाद में प्रकाशमान अथवा कहें अस्तित्वमान हए। अब दर्शन की भाषा में कहे तो वह एक (ईश्वर या इश्वरीय कण) ही अनेक में तब्दील हुआ।

हमारा यह ब्रह्मांड अत्यंत रहस्यमय है। इसकी निर्माण गाथा तो और भी रहस्यपूर्ण है। सृष्टि के आरम्भ में इस महाकाश में जो कुछ भी गोचर, अगोचर है यह सारा का सारा द्रव्य एक दाने सरीखे अति सघन पिंड में समाहित था जिसमें आज से करीब 14 अरब वर्ष पूर्व महाविस्फोट हुआ और उसी के बाद ब्रह्मांड निर्मित हुआ। यद्यपि शक्तिशाली दूरदर्शियों की मदद से इसके कई रहस्यों का अनावरण हो चुका है लेकिन यह जानना अभी शेष है कि आखिर महाविस्फोट के पहले क्षणों के बाद क्या हुआ?जैसे ग्रह, नक्षत्र तारों, मंदाकिनियों का निर्माण कैसे हुआ?पदार्थ में भार कहां से आया?

ऐसे अनेक अनसुलझे प्रश्नों के समाधान हेतु 1998 में जिनेवा के पास (स्विटजरलैंड फांस सीमा) लार्ड हेड्रन कोलाइडर नामक महामशीन में प्रोटोनों का महा भिड़ंत कराकर आशा की गई इससे कुछ-कुछ वैसी ही परिस्थितियां (बिग बैग) उत्पन्न होंगी जो ब्रह्मांड के उद्भव के समय थी। वैज्ञानिकों के अनुसार इस महाप्रयोग से अपरमित ऊर्जा के साथ-साथ कई मूलभूत कण निकल सकते हैं जिनमें से एक हिग्स बोसोन या गाड पार्टिकल हो सकते हैं। पीटर हिग्स नामक वैज्ञानिक की मान्यता है कि इन्हीं कणों के कारण अन्य द्रव्यों में द्रव्यमान (भार) सृजन हुआ और इन्हीं के कारण अलग-अलग चीजों का द्रव्यमान एक-दूसरे से अलग है। यद्यपि सभी एक ही द्रव्य से उद्भूत हुए है। **इन कणों से जुड़ी संकल्पना बहुत पहले ही विकसित हो चुकी थी लेकिन प्रयोगशाला स्तर पर अभी सत्यापन नहीं हो पाया था। उपरोक्त महाप्रयोग इसी सत्यापन की एक सीढ़ी है।**

फिर भी मूल प्रश्न अनुत्तरित है यदि ईश्वरीय कण (गाड पार्टिकल) से हम रू-ब-रू हो जाते हैं तो भी यह जानना शेष है कि आखिर इन कणों का निर्माण किसने किया?इस जगत का नियंता कौन है?जैसा कि कृष्ण ने गीता में उद्घोष किया था, 'एको अहम् द्वितीयोनास्ति' तो अभी भी इस एक अद्वितीय की खोज बाकी है। ईश्वर की कल्पना अत्यंत विशिष्ट है और सारे मानवीय प्रयास अत्यंत क्षुद्रों कृष्ण गीता में कहते हैं मुझे जानने के लिये दिव्य दृष्टि चाहिये और वह विज्ञान की ज्ञात सीमा से परे है।

इस रोमांचकारी खोज के बीच सारा विज्ञान जगत एक भारतीय वैज्ञानिक सत्येंद्र नाथ बोस के बहुमूल्य योगदान को भूल गया। 1924 में कोलकाता के भौतिकविद् सत्येंद्र नाथ बोस ने गैसों के तापीय व्यवहार के विश्लेषण पर क्वांटम स्टेटिस्टिक्स के शोध पत्र को ब्रिटिश जर्नल में प्रकाशन हेतु भेजा लेकिन वहां से इन्कार पर उन्होंने उसे प्रख्यात भौतिकविद् आइंस्टीन को भेजा। उन्होंने इसकी महत्ता को जानकर इसे जर्मन जर्नल में अनूदित किया तथा यह बोसआइंस्टीन स्टेरिस्टिक्स के तौर पर क्वांटम मैकेनिक्स का आधार बना। **आइंस्टीन ने पाया इस खोज ने उप परमाणु कण (सब एटॉमिक) की खोज का मार्ग प्रशस्त कर दिया है जिसका नाम उन्होंने भारतीय सहयोगी के नाम पर बोसोन किया। कालांतर में यही बोसोन कण, हिग्स बोसोन या गार्ड पार्टिकल (ईश्वरीय कण) प्रसिद्ध हुए।** ❑

पाकिस्तान एक आतंकवादी देश

हाल ही में लश्कर के खूंखार आतंकी अबू जुदाल की गिरफ्तारी से भारत में भिन्न-भिन्न स्थानों पर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकी कार्यवाहियों की गुत्थी काफी हद तक सुलझी है। साथ ही 26/11 के मुम्बई आतंकी हमले में पाकिस्तान एवं आईएसआई की मिलीभगत एवं कुटिल षड्यंत्रपूर्ण रणनीति का एक ओर पुख्ता सबूत भी मिला है। **पाकिस्तान अपने जन्मकाल से ही निरंतर, भारत एवं हिन्दू विरोधी भावनाओं को भड़का कर उसे लहूलुहान कर अन्दर से कमजोर करने की कुटिल नीति पर चल कर, एक अविश्वसनीय पड़ोसी बनकर सारे विश्व में मुस्लिम आतंकवाद की धुरी बन रहा है।**

9/11 के अमेरिका में वर्ड ट्रेड सेंटर पर हमले का मुख्य षड्यंत्रकर्ता खालिद शेख पाकिस्तान में पकड़ा गया। इस योजना का सूत्रधार ओसामा बिन लादेन तो पाकिस्तान की सैन्य मिलिट्री अकादमी एबटाबाद से कुछ ही दूरी पर अपनी उपस्थिति छिपाकर अंतत: अमेरिका के हाथों मरा।

2002 में इंडोनेशिया के वाली द्वीप के बम धमाकों का शातिर अपराधी उमर पाटेक को एक पाक सैन्य अधिकारी अब्दुल हमीद के घर से दबोचा गया।

लंदन मेट्रो रेल धमाकों के कर्त्ताधर्त्ता पाकिस्तान से गिरफ्तार हुए।

भारत में कंधार हवाई अपहरण कांड, मुम्बई में 1992 के सीरियल बम क्लास्टों के मुख्य आरोपी दाउद इब्राहीम, मेमन शेख, 26/11 मुम्बई हमलों का सरगना हाफिज सैय्यद, सैय्यद शेख लखवी सहित अनेक आतंकी आज भी कराची एवं लाहौर में सरेआम दनदना रहे हैं।

पाकिस्तान भारत से अपने यहां चल रही आतंकी गतिविधियों के ठोस सबूत मांगता है। भारत ने समय-समय पर गुलाम कश्मीर में विभिन्न आतंकी कैम्पों तथा गिरफ्तार पाकिस्तानी आतंकियों से प्राप्त सूचनाएं पाकिस्तान को सौंपी है। परन्तु व्यर्थ वह इन्हें अपर्याप्त कह कर टालता रहा है। पहले कसाब की जिन्दा गिरफ्तारी अब अबू जुदाल की सनसनीखेज गिरफ्तारी ने पाकिस्तानी झूठ की कलई खोल दी है। अमेरिका में गिरफ्तार डेविड हेडली के कोर्ट के समक्ष बयानों ने भी अबू जुदाल के रहस्योद्धाटनों की पुष्टि की है। भारत को आतंकी कार्यवाहियों के प्रति कठोर नीति अपनाकर अपने सशक्त कूटनीतिक माध्यमों द्वारा विश्व समुदाय को पाकिस्तानी आतंकी कार्यवाहियों को शरण, समर्थन एवं संरक्षण देने की नीतियों का पर्दाफाश करना चाहिये। ❑

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रीकृष्ण का जीवन क्रम

भारत की पहचान मर्यादा पुरुषोत्तम राम एवं योगेश्वर कृष्ण के माध्यम से ही होती है अपने आलौकिक देवीय गुणों एवं भव्य कृतित्व के कारण हमने उन्हें साक्षात् इश्वरीय अवतार ही मान लिया। उनका जन्मकाल त्रेतायुग एवं द्वापर युग में माना जाता है जो कि अत्यंत प्राचीन है। भारतद्वेषी यूरोपीय विद्वानों ने भगवान राम एवं कृष्ण को इतिहास या संस्कृति पुरुष न मानकर एक काल्पनिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक पात्र माना है, क्योंकि राम एवं कृष्ण के जीवन सम्बंधी क्रमबद्ध ऐतिहासिक तिथियां उनकी दृष्टि में इतिहास अनुकूल नहीं है। यद्यपि वाल्मीकि रामायण, भागवत ग्रन्थ एवं अनेक पुराणों में इन आलौकिक जीवन लीलाओं का क्रमबद्ध लिखित इतिहास, घटनाक्रम उपलब्ध है। यूरोपीय विद्वानों की इस चुनौती को स्वीकार कर शंकराचार्य वैदिक शोध संस्थान और सोमनाथ गुजरात ने सर्वप्रथम भगवान कृष्ण के जीवन सम्बंधित सभी घटनाओं का क्रम निश्चित किया है। इस गणना में वाथवी संहिता, विष्णु पुराण, महाभारत का महापुराण, गर्ग संहिता, श्रीमद् भागवत जैसे प्रमुख ग्रन्थों के मार्गदर्शन सहित कालगणना सूर्य सिद्धांत और विविध शास्त्रों के मंत्रों की भी मदद ली गई है जो इस प्रकार है–

1. महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में 18 जनवरी, 3156 बी.सी. गणना अनुसार हुआ।

2. महाभारत युद्ध के प्रथम दिन ही भगवान कृष्ण ने अर्जुन को श्रीमद् भगवत् गीता का अमृतमय उपदेश दिया था। इस बात को 5168 वर्ष हो चुके हैं। उस दिन श्रीकृष्ण की आयु 89 वर्ष 2 मास 7 दिन थी।

3. महाभारत युद्ध के 36 वर्ष बाद श्रीकृष्ण ने महाप्रयाण किया। उनके महाप्रयाण का दिन 18 फरवरी, 3120 वी.सी. शुक्रवार 2 बजकर 27 मिनट, 30 सैकंड पर गुजरात प्रदेश के प्रभाष क्षेत्र की हिरण्य नदी के तट पर हुआ। उस दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा थी। सोमनाथ ट्रस्ट के इस महत्वपूर्ण कालदिशा निर्धारण कार्य से हिन्दू धर्मावलम्बियों की श्रीकृष्ण के प्रति आस्था और सुदृढ़ हुई है।❑

360 लोगों ने लिया नेत्रदान करने का संकल्प

हिमाचल प्रदेश के सबसे बड़े मेडिकल कॉलेज आईजीएमसी के आई बैंक ने दृष्टिहीनों के लिये उनकी जिन्दगी रोशन करने के लिये उम्मीद पैदा कर दी है। अभी तक आईजीएमसी का आई बैंक 20 लोगों को नई रोशनी दे चुका है। मन की आंखों से प्राकृतिक सुन्दरता को निहारने को मजबूर इन बच्चों व बुजुर्गों को 14 लोगों ने अपनी आंखें दान कर उनके जीवन को रोशन किया है। अगस्त, 2010 में आई जीएमसी में नेत्र बैंक की स्थापना की गई थी और करीब 2 वर्षों के दौरान 360 लोगों ने अपने मरने के बाद अपनी आंखें दृष्टिहीनों को दान करने की प्रतिज्ञा ली है। हालांकि इस संख्या को बड़े महानगरों की अपेक्षा काफी कम माना जा रहा है। लेकिन रूढ़िवादिता में फंसे लोगों को जागृत करने के लिये यह आंकड़ा कम नहीं है। आईजीएमसी के नेत्र बैंक में नेत्रदानियों की संख्या में वृद्धि हो रही है और यह तादाद आने वाले दिनों में बढ़ने की उम्मीद है।

आईजीएमसी के नेत्र बैंक द्वारा दृष्टिहीनों को लगाई जा रही दान की गई आंखों को लगाने का खर्चा मात्र 1500 से दो हजार रुपये आ रहा है जबकि निजी अस्पतालों में यह राशि करीब एक लाख रुपये तक हो जाती है। आईजीएमसी के नेत्र विभाग द्वारा किये जा रहे इस तरह के ऑप्रेशन में मात्र दवाओं व अन्य इंजेक्शन आदि का खर्च लिया जाता है।

नेत्रदान करने वालों में सबसे ज्यादा आंकड़ा बुजुर्गों का है। युवा वर्ग का आंकड़ा अभी कम ही है जिसके कारण युवाओं व बच्चों की आंखों को कम ही बदला जा सका है।

आईजीएमसी के आई बैंक द्वारा जिन 20 दृष्टिहीनों को रोशनी नसीब हुई है उनमें आठ वर्ष के बच्चे से लेकर 70 वर्ष के वृद्ध शामिल हैं। इनमें भी सबसे अधिक संख्या 40 से 70 वर्ष के मध्य के दृष्टिहीनों की है। किसी भी नेत्रदान कर्त्ता की आंखों को दूसरे को उसी स्थिति में लगाया जा सकता है जब मृत्यु के 6 घंटों के भीतर सही अवस्था में आंखों को निकाला जा सके। यही नहीं, आंखों में किसी भी तरह का रोग या अन्य कमी नहीं होनी चाहिये अन्यथा नेत्रदान करने के बाद भी वे आंखें किसी के जीवन को रोशन नहीं कर सकती हैं। ❑

कबाड़ी ने बनाया हवा से चलने वाला इंजन

भारत में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। पूरी दुनिया हमारे देशवासियों की वैज्ञानिक एवं तकनीकी दक्षता का लोहा मानती है। जिन्होंने स्कूल-कॉलेजों में पढ़ाई नहीं की है उनके तकनीकी ज्ञान को देख कर बड़ा आश्चर्य होता है। पिछले दिनों ऐसे ही एक निरक्षर मिस्त्री ने चुम्बक और हवा से चलने वाला जेनरेटर बना कर ऊर्जा के क्षेत्र में एक नई राह खोल दी है। ये हैं वैशाली जिले (बिहार) के वीरेंद्र कुमार महतो जिनके आविष्कार का न केवल पेटेंट किया गया, बल्कि 'अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान पत्रिका' में भी इसका उल्लेख हुआ है।

श्री महतो 14 साल की आयु से कबाड़ी का धंधा करने लगे थे और अठारह साल के होते-होते ड्राईवर बन गए। कोई आठ साल पहले चेन्नई में वाहन चालक का काम करते हुए उनके मन में ऐसा इंजन (मोटर गाड़ी का) बनाने का विचार आया जो बिना पैट्रोल, डीजल या गैस के चल सके। नौकरी के बाद वे अपनी कार्यशाला में 'मारूति' कार के इंजन पर प्रयोग करने लगे। एक दिन उन्होंने हवा के दबाव से इंजन चालू करने और शक्तिशाली नियोडियम चुम्बक की सहायता से इंजन को गतिशील रखने में सफलता प्राप्त कर ली। भारत सरकार के पेटेंट विभाग ने ठोक-बजाकर इस आविष्कार को मान्यता दे, इसका पेटेंट कर दिया।

महतो ने यही नुस्खा बिजली पैदा करने वाले जेनरेटरों पर भी आजमाया और उन्हें इसमें भी सफलता मिल गई। केवल हवा के दबाव से छोटे-बड़े जेनरेटरों से बिजली बनाने का करिश्मा उन्होंने कर दिखा। अब वे कई संस्थाओं के सहयोग से अपने आविष्कार को व्यावसायिक रूप देने में लगे हैं। प्रतिष्ठित भारतीय विज्ञान कांग्रेस ने वीरेंद्र महतो को अपना सदस्य बनाया है, जब कि उच्चतम शिक्षा प्राप्त विद्वान् ही इसके सदस्य होते हैं। ❑

साठ वर्षों तक हम और हमारे सांसद क्या करते रहे?

हम अपने संविधान और संसदीय प्रणाली को विश्व भर के लोकतांत्रिक देशों में सब से सफल और सार्थक मानते आए हैं। अपनी प्रशंसा स्वयं करें या कोई और भला किसे क्या बुरा लगे! सबसे पहले साठ वर्षों में हम कुछ कर पाए या नहीं?यह प्रश्न स्वयं की समीक्षा से जुड़ा है। उत्तर हमारा आप का यही होगा, हां भाई बहुत कुछ हुआ है, इस उत्तर में कुछ भी गलत नहीं है। हमारी संसद ने काफी हद तक देश के संविधान के अनुसार ही काम किया है। संविधान में कुछ परिवर्तन भी किये जिनका स्वाद खट्टा मीठा ही रहा। जनता को मौलिक अधिकारों के अतिरिक्त सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार और मतादाता की कम से कम 18 वर्षों की आयु कर दी गई। कई महत्त्वपूर्ण फैसले हमारी संसद ने जनहित में किए। महिला आरक्षण, खाद्य सुरक्षा बिल तक हमारी संसद पहुंच गई है। भविष्य में भी कुछ देशहित कुछ जनहित के विधेयक पारित हो सकते हैं।

अब संसद में एक बड़ा महत्वपूर्ण विधेयक पारित होना है जिसे अन्ना हजारे और जनता जनलोकपाल बिल का नाम दे रही है और सरकार का अपना विधेयक लोकपाल बिल है। शब्द 'जन' का अर्थ है जैसा लोकपाल लोग चाहते हैं लेकिन आज हमारी संसद को जनलोकपाल बिल से परहेज है। यह घमासान मचा है दरअसल इसलिये क्योंकि सरकारों के बीच व्यापक रूप से भ्रष्टाचार फैल चुका है। स्वयं केन्द्र सरकार में अनेकों घोटाले हुए हैं। कुछ मंत्री महोदय सजा भुगत कर जमानत पर रिहा हो चुके हैं। कुछ मंत्रियों पर भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोप हैं। राज्य सरकारों पर भी भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोप हैं जिनके कारण सरकारों के बीच मनमुटाव उठा पटक जारी है। देश का दुर्भाग्य है कि भ्रष्टाचार आज देश के समक्ष सबसे बड़ा कलंक उभरकर सामने आया है जिसने राष्ट्रीय दलों एवं क्षेत्रीय दलों को कलंकित कर दिया है पर प्रत्येक राजनीतिक दल स्वयं को दूध का धुला हुआ और गंगा सा पवित्र मानने पर अड़ा हुआ है। एक दल दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगा कर जनता को गुमराह कर रहा है।

आज की संसद कैसी है, मेरे से बेहतर टीम अन्ना के वरिष्ठ कार्यकर्ता अरविंद केजरीवाल कह चुके हैं और सांसद सुन चुके हैं। मुझे यह कहना पड़ रहा है कि जहां गुण हैं वहां अवगुण भी होंगे पर यह अनदेखी जो हम से और हमारी सरकारों से इन साठ वर्षों के बीच हुई है शर्मनाक है। जनता सरकारों पर विश्वास करती रही और मंत्री भ्रष्ट तंत्र के माध्यम से अमीर से और बड़े अमीर होते गए लेकिन उनकी नापाक दौलत आज तक जगजाहिर नहीं हुई और सरकार के कब्जे में नहीं ली गई।

इस देश में कानूनी प्रक्रिया इतनी लम्बी है कि फैसला आने तक एक इंसान की आयु कम पड़ सकती है। इसलिए अपराधी अपराध से भयभीत नहीं है। उन्हें उनके द्वारा किए गलत काम पर पश्चाताप नहीं है। आमतौर पर छोटा कर्मचारी एक सौ रुपये की घूस लेते पकड़े जाने पर भी तुरंत जेल में डाला जाता है और सजा भुगतना शुरू कर देता है पर नेता लोगों पर चले मुकदमे लम्बे खींचे जाते हैं।

इस देश में कानूनी प्रक्रिया इतनी लम्बी है कि फैसला आने तक एक इंसान की आयु कम पड़ सकती है। इसलिए अपराधी अपराध से भयभीत नहीं है। उन्हें उनके द्वारा किए गलत काम पर पश्चाताप नहीं है। आमतौर पर छोटा कर्मचारी एक सौ रुपये की घूस लेते पकड़े जाने पर भी तुरंत जेल में डाला जाता है और सजा भुगतना शुरू कर देता है पर नेता लोगों पर चले मुकदमे लम्बे खींचे जाते हैं। अगर फैसला अभी गया तो सर्वोच्च न्यायालय जाने की उनकी क्षमता है। पटवारी और चपड़ासी की यह क्षमता कहां? कारण यह कि वे लोग तो उच्च न्यायालय तक पहुंचने का खर्च भी नहीं उठा सकते। भ्रष्टाचार केवल सरकारों और उनके तंत्रों में ही नहीं है हमारे समाज में भी घोर भ्रष्टाचार है। इस सम्बंध में हमें स्वयं को भ्रष्टाचार मुक्त करना होगा। भ्रष्टाचार का हिस्सा बन या निष्क्रीय बैठकर हम अपना और अपने देश का अहित कर रहे हैं।

–**केसी शर्मा**, गग्गल, कांगड़ा

बलिदानी शौर्य को नमन

मातृभूमि को दिलाने मुक्ति जो कमाया नाम
बलिदानी शौर्य की कमाई को नमन है,
वरमाला की बजाए फांसी को गले में डाला
आजादी के युद्ध के जवांई को नमन है
जिसने अमर क्रांति ज्वाला को जन्म दिया
पुण्य कोख वाली ऐसी माई को नमन है,
'इंकलाब जिन्दाबाद' घोष को नमन
भगत की क्रांति तरूणाई को नमन है।

जिनके लहू ने रचा क्रांति का इतिहास
जलियांवाले बाग के वीरों को नमन है,
शांति और अहिंसा के विचारों को नमन
क्रांति के गगन के सितारों को नमन है
आजादी की डोली के कहारों को नमन
लालाजी की पीठ के प्रहारों को नमन है
तुम मुझे खून दो, और मैं तुम्हें आजादी दूंगा
दिल्ली चलो वाली ललकारों को नमन है।

हमको उजाला देते-देते जो बुझ गए
उन पावन दीपों की कतारों को नमन है
मातृवन्दना के गीत गाते चूमा था जिन्हें
उन फांसी वाले पुण्य हारों को नमन है
बलिदानी स्वरों की पुकारों को नमन
क्रांतिकारियों ने जहां लिखा वंदेमातरम्
सेल्यूलर जेल की दीवारों को नमन है।

– **हेमराज राणा**, मिल्ला, सिरमौर

बुरा न मनाइये

राजनीति में उलझना और उलझाना नहीं,
परहितरत मित्र बन के दिखाइये।
कुर्सी हथियाने में जोड़-तोड़ जल्दबाजी।
साहस के साथ सहनशीलता निभाइये।
स्वार्थ-सुरा, की मदहोशी को छोड़ो सखे
सिकुड़ रहा जनतंत्र कुछ तो बचाइये।
आम आदमी से सीधे मुंह कभी बोले नहीं
हम सीधे बोलें तो बुरा न मनाइये।

– **रामकृष्ण शर्मा**, गगरेट

कौन है सुन्दर नारी?

किसी गांव या कस्बे की, साधारण-सी भारतीय नारी,
कैसे मान या कह सकती है स्वयं को सुन्दर?
बिना अत्याधुनिक हुए
और पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण किए
भला हो सकती है कोई नारी
सुन्दर, सम्मोहक, आकर्षक, मनभावन?
सौंदर्य के मापदण्ड, शर्तें और नियम
उसको मालूम है क्या?
भांति-भांति के रसायनों से
समस्त शरीर के रसायनों से
समस्त शरीर की त्वचा को
उधेड़ देने की हद तक
धोना, रगड़ना, मलना, संवारना
और महकाना पड़ता है।
चेहरे पर त्वचा की अपेक्षा
तीन-चार गुणा अधिक,
क्रीम, पाउडर, अनेकों रासायनिक पदार्थ
लीपने, पोतने, घिसने, मलने पड़ते हैं!
भूखों मरना पड़ता है महीनों,
शरीर की सुडौलता बनाए रखने के लिए
श्रम करना होता है,
उच्चकोटि के सन्यासी व योगी से अधिक
केवल और केवल शरीर साधने के लिए!
मॉडलिंग और फिल्मी दुनिया के
दुष्टों, धूर्तों, दलालों से
करवाना पड़ता है अपना शोषण।
अनिवार्य है गुलामी करना,
विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की,
और उनकी कठपुतली बनना भी!
लगभग निर्वस्त्र होकर घूमते फिरना भी है लाजिमी।
सर्वथा त्याग करना पड़ता है
नारी-सुलभ लज्जा और संवेदना का।
तब जाकर कहीं संभावना और पात्रता बनती है
'सुन्दरी' की उपाधि मिलने की!!

–**मुमुक्षु कमलेश ठाकुर**, मतियारा, चम्बा

नारी अबला नहीं सबला है

❑ शकुंतला देवी अग्रवाल

वर्तमान में महिलाओं की अधोगति के कारणों को अनेक भागों में विभक्त किया जा सकता है। उनमें से कुछ राष्ट्रीय अर्थात् राजनीतिक हैं और कुछ सामाजिक। भारत वर्ष की पराधीनता के कारण पुरूषों के साथ स्त्रियों का भी अधोगति को प्राप्त होना स्वाभाविक ही था, परंतु पश्चिमीय सभ्यता का प्रभाव, स्त्रियों में शिक्षा का अभाव, अनमेल विवाह आदि सामाजिक कुरीतियां ऐसे सामाजिक कारण थे, जिन्होंने रानी झांसी और महादेवी दुर्गावती की संतान को सबला से अबला बना दिया। आज पढ़ी-लिखी बहिनों की ओर से वैवाहिक जीवन दु:खमय है यह सिद्ध करने के लिए लेख-पर-लेख निकलते हैं। पुरुषों के अत्याचार को कोसा जाता है और अनपढ़ बहिनों की ओर से उसका समर्थन किया जाता है। इस प्रकार पुरुष और नारी का संघर्ष आरंभ हो जाता है और दोनों का दाम्पत्य जीवन और भी अधिक दु:खमय हो जाता है। पति पत्नी के दोषों को देखता है और पत्नी पति के दोषों को।

वेदों से लेकर हमारे सभी शास्त्रों और धर्मग्रंथों में स्त्री का दर्जा पुरूष से ऊंचा बताया गया है। प्राचीन काल में हिन्दू-नारी को मान और पूजा का यह स्तुत्य दर्जा सदा प्राप्त भी रहा है। सीताराम, राधेश्याम, राधाकृष्ण, गौरीशंकर आदि नाम आज भी स्पष्ट बता रहे हैं कि हिन्दू-सभ्यता में पहले स्त्री को स्थान देकर पीछे पुरुष को दिया जाता है।

मेरा अनुभव

मैंने इस प्रश्न पर गम्भीर विचार किया है। मेरा अनुभव इससे भिन्न है। मैं वैवाहिक जीवन को दु:खमय नहीं समझती। मैं स्त्री को दीन-हीन अथवा अबला भी नहीं समझती और न स्त्रियों की वर्तमान दुर्दशा का दोष ही पुरूषों को देना चाहती हूं। दूसरे के दोषों तथा अपने गुणों की समीक्षा से किसी भी मनुष्य की उन्नति नहीं हो सकती, इससे तो अवनति ही होती है। जो सिद्धांत व्यक्ति रूप से ठीक है, वही समष्टि रूप से नारी-जाति के लिये भी ठीक है। यदि हिन्दू-नारी पुरूषों के अत्याचार की ही दिन-रात चर्चा करती रहे और इस प्रकार उन्नति के शिखर पर पहुंचना अथवा ऐहिक सुख को प्राप्त करना चाहे, तो यह आशा दुराशामात्र है।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन:। - का परम सिद्धांत नारी-जाति की उन्नति के लिए भी वैसा ही अमोघ अस्त्र है, जैसा किसी के व्यक्तिगत जीवन के लिए। मेरा यह अनुभव है कि यदि हमारी बहिनें अपनी शक्ति को पहचान जाएं, यदि वे अपने कर्तव्य का पालन करने लग जायँ, तो इससे न केवल उनका अपना जीवन सुखमय हो जाए, वरं पुरूषों का भी काफी सुधार हो जाए।

उदाहरण के रूप में आप विचार करें, हमारी एक जीती-जागती समस्या है विधवाओं का प्रश्न। इसका एक मुख्य कारण है अनमेल विवाह। परंतु यह विवाह होते ही क्यों हैं? इसलिए कि हमारी बहिनें अशिक्षिता हैं। वे अपनी शक्ति को पहचानतीं नहीं। यदि कन्या की माता यह आग्रह करे कि मैं अपनी पुत्री का विवाह बूढ़े से कभी नहीं होने दूंगी तो संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं, जो एक हिन्दू-माता की इच्छा का विरोध कर सके। जब तक पुरूष के साथ पत्नी यज्ञ में न बैठे, कोई यज्ञ पूर्ण हो नहीं सकता। विवाह-संस्कार में भी कन्या की माता की उपस्थिति अत्यावश्यक है। शास्त्रों में तो हिन्दू-विवाह को इस जन्म का नहीं, जन्म जन्मांतर का सम्बंध बताया गया है। हिंदु-देवी यह प्रार्थना करती है कि हे स्वामिन! जन्म-जन्मांतर में आप ही मेरे पतिदेव होवें। तो ऐसे पवित्र, शाश्वत सम्बंध के विषय में बहिनों की ओर से ऐसी उपेक्षा और तटस्थता क्यों ?

हिन्दू-नारी अबला नहीं

हिन्दू-नारी अबला नहीं। उसको अबला समझने वाले भारी भूल में हैं। प्राचीन काल से लेकर अब तक हिन्दू-नारी ने अपने सबला होने का बराबर प्रमाण दिया है। प्राचीन काल में कैकेयी आदि महारानियों ने युद्ध भूमि में वीरता के अलौकिक कार्यों के द्वारा महारथियों से वरों को प्राप्त किया। अर्वाचीन काल में महारानी झांसी ने अंग्रेजी-साम्राज्य के दांत खट्टे किये। आज भी भारत की अनेकों सुपुत्रियां स्वतंत्र देशों के बड़े से बड़े नेताओं के साथ टक्कर ले सकती हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी उस दैवी शक्ति को पहचानें, उसे जाग्रत् करने तथा बढ़ाने का प्रयत्न करें। अपने धर्म पर सुदृढ़ रहें। अपने-आप को दीन-हीन समझना छोड़ दें। संसार की काया पलट देने की शक्ति हिंदू-नारी में है। पुरूषों पर दोषारोपण करने के बजाए हम अपनी न्यूवताओं पर विचार करें और उनको दूर करने की चेष्टा करें। पुरूष तो नारी के बिना अधूरा है, कुछ भी करने में असमर्थ है। नारी पुरूष को सन्मार्ग दिखाने वाली है, वह उसकी माता है और उसका भविष्य बनाने वाली है। ❑

दही : बढ़ाता है रोग प्रतिरोधक क्षमता

न देखो खाता-बही, रोज खाओ दही। पीजीआई का गेस्ट्रो-इंटेलॉजी विभाग अपने यहां इलाज कराने पहुंचे मरीजों को यही सलाह दे रहा है। मरीजों को बताया जा रहा है कि सर्दी हो या गर्मी, बसंत हो या बरसात। बुखार हो या दस्त, दिन हो या रात। दही एक ऐसा रामबाण आहार है जिसे हर मौसम में लेना फायदेमंद है। दही न केवल शरीर को ताकत प्रदान करती है, बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता का भी विकास करती है। पीजीआई ने दही पर जो शोध किया है उसके कुछ ऐसे ही हैरतअंगेज नतीजे सामने आए हैं।

पीजीआई में हुए शोध में यह सामने आया कि दही सर्दी में, बरसात में, बुखार में, गला खराब में या और किसी बीमारी के दौरान बिना किसी रुकावट के ली जा सकती है। लोगों में ठंडे मौसम के दौरान दही न खाने की जो धारणाएं बनी हैं वे बिल्कुल निराधार हैं।

पीजीआई में हुए शोध में यह सामने आया कि दही सर्दी में, बरसात में, बुखार में, गला खराब में या और किसी बीमारी के दौरान बिना किसी रुकावट के ली जा सकती है। लोगों में ठंडे मौसम के दौरान दही न खाने की जो धारणाएं बनी हैं वे बिल्कुल निराधार हैं। जिन लोगों को दूध हजम नहीं होता उनके लिये तो दही उपयोगी एवं अनुकूल आहार है। वे दूध के विकल्प के तौर पर दही का बिना किसी रुकावट के इस्तेमाल कर सकते हैं।

शोध करने वाली पीजीआई के गेस्ट्रो इटेलोजी विभाग की प्रो. सत्यावती राणा के मुताबिक बहुत से लोगों को दूध हजम नहीं होता। वह दिन में लिये गए दूध का केवल आधा ही हजम कर पाते हैं। न हजम हुआ दूध पेट में बैक्टीरिया के सम्पर्क में आता है और गैस व अफारे के साथ पेट में भारीपन पैदा करता है।

इससे सिर में दर्द भी हो जाता है और दो नुकसान होते हैं। एक तो मरीज को पूरा न्यूट्रीशन नहीं मिल पाता और दूसरा उसे बेचैनी व परेशानी अलग होने लगती है। ऐसे लोगों को दूध में मौजूद लेक्टोस बर्दाश्त न करने (इनटोलरेंस) की समस्या होती है। इससे दूध से मिलने वाला एनिमल प्रोटीन भी शरीर में घट जाता है, लेकिन ऐसे लोग दही हजम कर सकते हैं। उन्हें दिन में आधा किलो दूध की बजाए दही खानी चाहिये।

डॉ. राणा के अनुसार एक हजार से भी ज्यादा मरीजों पर शोध करने के उपरांत पाया गया कि दही से उन्हें वो समस्याएं नहीं हुई जो दूध पीने के बाद होती रही। दूसरा उन्हें शरीर के लिये जरूरी पूरा न्यूट्रीशन मिला जिसमें कई विटामिन व अमीनो एसिड भी थे। उन्होंने बताया कि चार घंटे के दौरान इस समस्या से परेशान लोगों को आधा किलो दूध से बनी दही खिला दी गई। फिर उनका मुआयना किया गया कि गेस्ट्रोइंटेस्टाइनल ट्रेक्ट में जाकर दही ने कैसे फायदा पहुंचाया।

डॉ. राणा के अनुसार अब ये जानने की कोशिश भी की जा रही है कि कोलोन कैंसर के मरीजों में सर्जरी और रेडियोग्राफी के बाद दही लेने का क्या लाभ सामने आता है। उन्होंने बताया कि मरीजों को आधा किलो दूध पिलाकर अमेरिका से मंगवाई गई मशीन पर टेस्ट किया जाता है। मरीजों को फूंक मारने को कहा जाता है जिससे मशीन पर पूरे जीआई ट्रेक्ट की वास्तविक स्थिति सामने आ जाती है। पता चल जाता है कि कितना दूध हजम हुआ और कितना हजम नहीं हुआ। ❑

मसाले औषधीय गुणों से भरपूर

भारतीय भोजन में मसालों का प्रयोग होता रहा है और अब नवीनतम शोधों से यह पता चला है कि ये मसाले स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद हैं। अमरीका में कॉरनेल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं द्वारा किये गए एक शोध के अनुसार कुछ मसालों में कीटाणूरोधी गुण पाए जाते हैं जो फूड प्वायजनिंग और अन्य संक्रमण की सम्भावनाओं को कम करते हैं। ये मसाले हैं अदरक, प्याज, काली मिर्च, जीरा, पुदीना, लहसुन, हल्दी व लौंग आदि। हल्दी का प्रयोग तो जख्म भरने में किया जाता ही रहा है। इसके अतिरिक्त लौंग का प्रयोग दांत दर्द में, लहसुन का प्रयोग कॉलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में, जीरे का प्रयोग पाचक पदार्थ के रूप में प्राय: हम करते ही हैं। इनका सही मात्रा में प्रयोग कई रोगों के इलाज में भी सहायक सिद्ध हो सकता है क्योंकि इन मसालों में कई औषधीय गुण छिपे हैं। ❑

जरूरी है मिट्टी का परीक्षण

मिट्टी परीक्षण से खेत की मिट्टी के रासायनिक, भौतिक तथा जैविक गुणों का निरीक्षण करना और उसकी उपजाऊ शक्ति का वैज्ञानिक ढंग से मूल्यांकन किया जाता है। मृदा परीक्षण से खादों तथा आवश्यक भूमि सुधारकों की उचित मात्रा का पता लगता है। ऐसा करने से किसान अपनी जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बनाए रख सकता है और पैदावार भी बढ़ा सकता है। जब भिन्न-भिन्न फसलों को खेतों में उगाया जाता है तो ये फसलें भूमि से पोषक तत्वों को ग्रहण करती है और यदि ग्रहण किये गए पोषक तत्वों की उचित मात्रा को खेतों में न डाला जाए तो धीरे-धीरे एक या अनेक तत्वों की उचित मात्रा की कमी के कारण उपज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि मिट्टी में किसी तत्व की मात्रा अधिक हो परन्तु मिट्टी के परीक्षण के अभाव से उस तत्व को किसान लगातार खेतों में डालते हों। ऐसा करने से एक तत्व अधिक मात्रा में हो जाता है तथा दूसरे की मात्रा उसके मुकाबले में कम हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप एक तो बहुमूल्य खादें नष्ट होती हैं साथ ही मिट्टी में तत्वों का असंतुलन हो जाता है।

मिट्टी परीक्षण के आधार पर हम भूमि के विभिन्न पोषक तत्वों के मात्रा विशेषक नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर व जस्ता आदि के स्तर का सही मूल्यांकन कर सकते हैं और फसल को उसकी आवश्यकतानुसार संतुलित मात्रा में डाल कर अच्छा पैदावार ले सकते हैं।

मिट्टी परीक्षण कब कराएं?

1. खेत से मिट्टी का नमूना वर्ष में फसल काटने के बाद कभी भी ले सकते हैं।
2. प्रत्येक खेत की मिट्टी का अलग-अलग नमूना लें। कम से कम तीन वर्ष में एक बार जांच अवश्य कराएं।
3. मिट्टी का नमूना बिजाई से कम से कम एक माह पहले लेकर निकटतम मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में परीक्षण के लिये भेजें ताकि बुवाई से पहले परीक्षण की रिपोर्ट मालूम हो।
4. नमूना खाली खेत से फसल की कटाई के बाद लें। यदि खड़ी फसल से नमूना लेना पड़े तो कतारों के बीच से लें।

मिट्टी का नमूना इस प्रकार लिया जाना चाहिये ताकि यह पूरे खेत का प्रतिनिधित्व करता हो और इसकी जांच की सिफारिशें पूरे खेत के लिये लागू हों।

मिट्टी का नमूना कैसे लें?

1. खेत को मिट्टी के रंग, बनावट और उत्पादकता के आधार पर बांटें।
2. खेत के एक समान भागकर जिसका नमूना लेना हो उसके 15-20 स्थानों पर निशान लगाएं।
3. निशान वाले स्थानों की ऊपरी सतह से घास-फूस व पत्थर आदि साफ करें तथा आगर की सहायता से निशानदेह स्थानों से मिट्टी लें।
4. आगर न होने की दशा में नमूने लेने के लिये खुरपी का प्रयोग करें तथा खुरपी से वी आकार का 6 इंच गहरा गड्ढा खोदें।
5. खुरपी से गड्ढे की फालतू मिट्टी निकालें, फिर चित्रानुसार खुरपी से गड्ढे की समतल दीवार से लगभग 2-3 से.मी. यानी एक अंगुली मोटी मिट्टी की परत लम्बाई में निकालें।
6. इस तरह आगर या खुरपी से 15-20 निशानदेह स्थानों से ली गई मिट्टी को अच्छी तरह मिलाएं।
7. मिट्टी का ढेर लगाएं। 8. चार बराबर हिस्सों में बांटें।
9. दो हिस्से चुनें तथा दो हिस्से छोड़ें।
10. फिर इन दो हिस्सों को मिलाएं। दुबारा चार हिस्सों में बांटें।
11. दो हिस्से चुनें तथा दो हिस्से छोड़ें।
12. यह प्रक्रिया तब तक जारी रखें जब तक मिट्टी का आधा किलोग्राम प्रतिनिधित्व नमूना न मिल जाए।
13. मिट्टी के नमूने को सूती थैली में भरें और लेबल लगाए जिस पर किसान का नाम, खेत का नाम, उगाई जाने वाली फसल, गांव व ब्लॉक इत्यादि का विवरण हो।

जिन किसानों को मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड उपलब्ध हो, नमूने इस कार्ड सहित जांच के लिये भेजें।

नमूने उस स्थान से न लें जहां

1. खाद का ढेर, मेंढ़, सिंचाई की नाली या भूमि सुधारक रसायन इस्तेमाल के लिये रखा हो।
2. खेत के पास उगी किसी पेड़ की जड़ों वाले स्थान से।
3. रासायनिक या गली-सड़ी खाद कुछ दिन पहले डाली हो।
4. झाड़ियों को जलाया हो।
5. गीली मिट्टी का नमूना न लें यदि लेना पड़े तो छाया में सूखा लें।
6. नमूना सूखी साफ सूती या पॉलीथीन के लिफाफे में डालें। इसे खाद के बोरों व रसायनों से दूर रखें। ❑

कृषि के माध्यम से कैरियर मैनेजमेंट

❑ कृष्ण मुरारी

भारत एक कृषि प्रधान देश है, पर परम्परागत कृषि के स्वरूप में अब कई तरह के बदलाव नजर आने लगे हैं। कृषि का व्यावसायीकरण हो चुका है। इसीलिये कॉमर्शियल फार्मिंग का चलन बढ़ा है। इसके अलावा कृषि के क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन भी नजर आने लगे हैं। इन्हीं बदलावों के मद्देनजर एग्री-बिजनेस मैनेजमेंट जैसे पाठ्यक्रमों की शुरुआत हुई है। इसके तहत कृषि उत्पादन से जुड़े विभिन्न विषय, जैसे खाद्य पदार्थ, खाद, बीज, कृषि उपकरण, ऊर्जा आदि की बातें होती हैं। इसके अलावा एग्रीकल्चरल इंश्योरेंस, मार्केटिंग, पैकिंग, स्टोरेज, प्रोसेसिंग, ट्रांसपोर्टेशन आदि की भी विस्तार से चर्चा की जाती है।

कोर्स व शैक्षणिक योग्यता : एग्री-बिजनेस मैनेजमेंट का कोर्स दो वर्ष का होता है। इसमें प्रवेश ग्रेजुएशन के बाद एंट्रेंस टेस्ट के माध्यम से मिलता है। एग्रीकल्चर, हॉर्टिकल्चर आदि सम्बंधित विषयों में ग्रेजुएट को प्राथमिकता दी जाती है।

पाठ्यक्रम का स्वरूप : एग्री-बिजनेस मैनेजमेंट कोर्स के तहत एग्री-बिजनेस एनवायरमेंट एंड पॉलिसी, एग्री बिजनेस फाइनेंशियल मैनेजमेंट, एग्री सप्लाई चेन मैनेजमेंट, मैनेजरियल इकोनॉमिक्स एंड एकाउंटिंग, एग्री बिजनेस को ऑपरेटिव मैनेजमेंट आदि टॉपिक्स को विस्तार से समझाया जाता है।

अवसर कहां : इस फील्ड में तमाम सरकारी और निजी सेक्टरों में प्रोफेशनल्स की मांग बनी रहती है। इसके अलावा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों से जुड़े एनजीओ में भी अवसर होते हैं। मुख्य रूप से एग्रीकल्चर इंडस्ट्री, फाइनेंशियल सेक्टर, एकेडमिक सेक्टर, एग्री बैंकिंग, फार्मिंग प्रोजेक्ट, एग्रीकल्चर कंजरवेशन, सीड फर्म्स, पेस्टीसाइड कंपनी, फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री, इंश्योरेंस सेक्टर आदि में मौके मिलते हैं। इन जगहों पर आप प्लांटेशन मैनेजर, एग्रीकल्चर इंश्योरेंस मैनेजर, फूड ब्रोकर, सप्लाई मैनेजर, परचेज एग्जीक्यूटिव, लोन ऑफिसर, प्रोडक्ट एनालिस्ट आदि के रूप में जॉब पा सकते हैं। ❑

समाज सेवा में भी है कैरियर

कार्यों को पूरा करने के लिए आज प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं की मांग बढ़ती जा रही है। यदि आप भी सोशल वर्क में ऑनर्स कर रहे हैं, तो इस कोर्स पर बेहतर पकड़ बनाने के लिये मेहनत और लगन के साथ तैयारी में जुट जाएं।

इस कार्स के अंतर्गत समाज सेवा सिद्धांत एवं प्रयोग, समाज का ढांचा, मानवीय वृद्धि एवं व्यक्तित्व विकास, सामाजिक समस्याएं, समाज सेवा की विधियों, समाज सेवा के क्षेत्र, सामाजिक नीति एवं योजना, सामाजिक विकास, संचार जैसे अनिवार्य विषयों के अलावा, कुछ वैकल्पिक विषय भी पढ़ाए जाते हैं। इसके साथ-साथ सोशल वर्क के व्यावहारिक पहलुओं को सीखने के लिये सामाजिक कल्याण एवं विकास के क्षेत्र में कार्यरत एजेंसियों में स्टूडेंट्स को सप्ताह में दो अथवा तीन दिन के लिये फल्ड वर्क भी करना पड़ता है।

सीखें डाक्यूमेंटेशन करना

सोशल वर्क में डॉक्यूमेंटेशन का विशेष महत्व है। इसमें डायग्राम्स, ग्राफ, टेबल्स एवं चाटों का प्रयोग करते हुए लेखन कार्य करना होता है। लगातार अभ्यास से बहुत जल्द आप खुद में सुधार देखेंगे। इसमें व्यक्तित्व एवं व्यवहार अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिये अपने व्यवहार में सरलता और सहजता लाएं।

मैदानी अभ्यास नियमित करें

इसके अंतर्गत सम्पूर्ण समाज एक प्रयोगशाला है। फील्ड प्रैक्टिस लर्निंग के लिये सामाजिक संरचना, सामाजिक घटनाओं, मानवीय सम्बंधों, सामाजिक मनोविज्ञान को समझें।

अवलोकन व विश्लेषण

सोशल वर्क पाठ्यक्रम के अंतर्गत फील्ड वर्क के दौरान ऐसे अनेक अवसर आते हैं, जब विद्यार्थियों को कुछ न कुछ अवलोकन करना होता है। तर्कपूर्ण सोच का प्रयोग करते हुए अवलोकन किये गए बिन्दुओं का विश्लेषण करें।

कार्यशालाओं में जाएं और ज्ञान पाएं

कार्यशालाओं में भागीदारी बेहतर मंच प्रदान करती है। इनमें सक्रिय रूप से भाग लेने से आप अपने विषय में रूचि लेंगे और उसे गहराई से समझेंगे।

किताबों से करें दोस्ती

समाज सेवा विषय के आधारभूत सिद्धांतों को समझने के लिये कुछ अच्छी किताबें हैं, जिनसे आपको इस विषय पर पकड़ बनाने में आसानी होगी। ❑

अमरनाथ यात्रा की अवधि घटाने का भयानक नतीजा

❑ तरुण विजय

इस साल अमरनाथ यात्रा फिर जटिलताओं में ऐसी उलझी कि 25 जून से 9 जुलाई तक के 16 दिनों में 51 यात्रियों की मृत्यु हुई, जिनमें 22 वर्ष के जवान भी थे। ये पंक्तियां लिखे जाने तक यह दर्दनाक आंकड़ा 60 तक जा पहुंचा। है। इसके बावजूद शिव भक्त यात्रियों का आना निरंतर जारी है और प्रदेश सरकार के तमाम दिखावटी प्रयासों तथा बैठकों के बावजूद यात्रा पथ पर यात्रियों के लिये जिन सुविधाओं की आवश्यकता होती है, वे नाममात्र को ही उपलब्ध हैं।

भीषण बरसात, तूफान बर्फबारी तथा आतंकवादियों के हमले के बावजूद यात्रियों का आना न कम हुआ, न थमा। यह हिन्दू धर्म की वह आंतरिक शक्ति है जो साम्प्रदायिक और नफरत से भरपूर अलगाववादी तत्वों के सामने विनम्रता, साहस और दृढ़ता के साथ प्रभु भक्ति में भक्तों को तल्लीन रखती है। कश्मीर घाटी के मुट्ठी भर पाकिस्तानपरस्त अलगाववादियों ने सत्ता का भी भरपूर उपयोग करते हुए पिछले अनेक वर्षों से अमरनाथ यात्रा रोकने, बाधित करने, यात्रियों को निरुत्साहित करने का हर सम्भव प्रयास किया। 4 महीने की यात्रा 2 महीने तक सिकोड़ी गई। उसके बाद प्रदेश सरकार की कठपुतली बने अमरनाथ श्राइन बोर्ड ने यात्रा पहले 55, फिर 48, 45 और इस साल 39 दिन तक कम कर दी। फिर श्रीनगर से अलगाववादी तत्वों की ओर से आवाज उठी कि यह यात्रा 15 दिन से ज्यादा नहीं होनी चाहिये क्योंकि इसकी वजह से कश्मीर के पर्यावरण को क्षति पहुंचती है।

यदि यात्रा का एक पथ है तो यात्रा के विरोध का भी एक सुविचारित और सुनियोजित पथ दिखाई देता है। जैसे कश्मीर घाटी को पहले हिन्दू विहीन किया गया, वहां से अल्पसंख्यक 5 लाख हिन्दुओं को अपमानित, प्रताड़ित और जलील करके निकाल दिया गया, फिर कश्मीर केवल उन पर्यटकों के लिये खुला रखने का फैसला हुआ जिनसे वहां की अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचता लेकिन किसी भी दृष्टि से कश्मीर का हिन्दू स्वरूप बचा न रहे, यह प्रयास अमरनाथ यात्रा के विरोध की जड़ में है जबकि दुनिया में अमरनाथ जैसी सर्वपंथ, समभाव और सबके प्रति समादर रखने वाली कोई यात्रा हो ही नहीं सकती। इस यात्रा के पुन: आरम्भ के मूल में एक मुस्लिम गडरिये को श्रेय दिया जाता है। इस यात्रा में तमाम कुली और घोड़े वाले मुस्लिम होते हैं जो केवल यात्रा अवधि के दौरान ही सालभर की कमाई कर लेते हैं। अमरनाथ यात्रा क्षेत्र के सम्पूर्ण क्षेत्र में रहने वाले लोगों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार यात्रियों द्वारा किया जाने वाला खर्च ही है।

यदि यात्रा का एक पथ है तो यात्रा के विरोध का भी एक सुविचारित और सुनियोजित पथ दिखाई देता है। जैसे कश्मीर घाटी को पहले हिन्दू विहीन किया गया, वहां से अल्पसंख्यक 5 लाख हिन्दुओं को अपमानित, प्रताड़ित और जलील करके निकाल दिया गया, फिर कश्मीर केवल उन पर्यटकों के लिये खुला रखने का फैसला हुआ जिनसे वहां की अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचता लेकिन किसी भी दृष्टि से कश्मीर का हिन्दू स्वरूप बचा न रहे, यह प्रयास अमरनाथ यात्रा के विरोध की जड़ में है

इस बार यात्रा में पंक्ति बनाकर चलने की नई व्यवस्था लागू की गई है। इस कारण थकान, उद्विग्नता और तनाव बढ़ने लगा है। यात्रियों के लिये विश्राम और तम्बुओं की घोर अव्यवस्था और कमी है। इस कारण लोग जल्दी से जल्दी आगे बढ़ने के प्रयास में खतरनाक छोटी पहाड़ी पगडंडियों से नीचे गिर जाते हैं। जब उन्हें मेडिकल जांच या डॉक्टरी सहायता की जरूरत होती है तो इस दबाव में कि भयानक भीड़ से घिरे डाक्टर से दवा लेने में जो वक्त लगेगा उस कारण दर्शन में देरी होगी, शायद दर्शन ही न हो पाएं, कई यात्री दवा लिये बिना उत्साह के अंधे आवेग में मौत के शिकार हो जाते हैं। इस बार पूरी यात्रा में पानी की कमी यात्रियों को बेहद तड़पा रही है। एक समय था जब देशभर से लंगर वाले यात्रियों के लिये गर्म-गर्म पूरी, सब्जी और हलवा मुफ्त परोसते थे। अब यात्री इन लंगर वालों को सरकारी व्यवस्था का शिकार होते देखते हैं। अमरनाथ श्राइन बोर्ड ने एक और तमाशा यह किया कि यात्रियों से मैडिकल सर्टीफिकेट लाने की मांग कर डाली। यात्रियों की विभिन्न पड़ावों पर मैडिकल जांच के बाद केवल सक्षम पाए गए यात्रियों को ही आगे बढ़ने की अनुमति देने की जो व्यवस्था कैलाश यात्रा के संदर्भ में है वह यहां पर नहीं की जा सकती?

यह यात्रा 2 हजार साल पहले से चल रही है। ईसा पूर्व 32 सन् के ग्रंथों में यात्रा का उल्लेख है। **(शेष पृष्ठ 28 पर)**

वजीर रामसिंह पठानिया

बलिदान दिवस 17 अगस्त

अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध भारत के चप्पे-चप्पे पर वीरों ने संग्राम किया है। हिमाचल प्रदेश के नूरपुर रियासत के वजीर रामसिंह पठानिया ने 1848 में ही स्वतंत्रता का बिगुल फूंक दिया था। इनका जन्म वजीर शामसिंह एवं इंदौरी देवी के घर 1824 में हुआ था। पिता के बाद इन्होंने 1848 में वजीर का पद सम्भाला। उस समय रियासत के राजा वीरसिंह का देहांत हो चुका था। उनका बेटा जसवंत सिंह केवल दस साल का था।

अंग्रेजों ने जसवंत सिंह को नाबालिग बताकर राजा मानने से इन्कार कर दिया तथा उसकी 20 हजार रुपये वार्षिक पेंशन निर्धारित कर दी। इस पर रामसिंह बौखला गए। उन्होंने जम्मू से मनहास, जसवां से जसरोटिये, अपने क्षेत्र से पठानिये और कटोच राजपूतों को एकत्र किया। पंजाब से सरनाचंद 500 हरिचंद राजपूतों को ले आया। 14 अगस्त 1848 की रात में सबने शाहपुर कण्डी दुर्ग पर हमला बोल दिया। वह दुर्ग उस समय अंग्रेजों के अधिकार में था। भारी मारकाट के बाद 15 अगस्त को रामसिंह ने अंग्रेजी सेना को खदेड़कर दुर्ग पर अपना झंडा लहरा दिया।

रामसिंह ने सब ओर ढोल पिटवाकर मुनादी करवाई कि नूरपुर रियासत से अंग्रेजी राज्य समाप्त हो गया है। रियासत का राजा जसवंत सिंह है और मैं उनका वजीर। इस घोषणा से पहाड़ी राजाओं में उत्साह की लहर दौड़ गयी। वे सब भी रामसिंह के झंडे के नीचे आने लगे।

इसके बाद रामसिंह ने सब ओर ढोल पिटवाकर मुनादी करवाई कि नूरपुर रियासत से अंग्रेजी राज्य समाप्त हो गया है। रियासत का राजा जसवंत सिंह है और मैं उनका वजीर। इस घोषणा से पहाड़ी राजाओं में उत्साह की लहर दौड़ गयी। वे सब भी रामसिंह के झंडे के नीचे आने लगे, लेकिन अंग्रेजों ने और रसद लेकर फिर से दुर्ग पर धावा बोल दिया। शस्त्रास्त्र के अभाव में रामसिंह को दुर्ग छोड़ना पड़ा; पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

वे पंजाब के रास्ते गुजरात गए और रसूल के कमांडर से 1000 सिख सैनिक और रसद लेकर लौटे। इनकी सहायता से उन्होंने फिर से दुर्ग पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजी सेना पठानकोट भाग गई। यह सुनकर जसवां, दातारपुर, कांगड़ा तथा ऊना के शासकों ने भी स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया, पर अंग्रेज भी कम नहीं थे, उन्होंने कोलकाता से कुमुक बुलाकर फिर हमला किया। रामसिंह पठानिया को एक बार फिर दुर्ग छोड़ना पड़ा। उन्होंने राजा शेरसिंह के 500 वीर सैनिकों की सहायता से 'डल्ले की धार' पर मोर्चा बांधा। अंग्रेजों ने 'कुमणी दे बैल' में डेरा डाल दिया।

दोनों दलों में मुकेसर और मरीकोट के जंगलों में भीषण युद्ध हुआ। रामसिंह पठानिया की 'चण्डी' नामक तलवार 25 सेर वजन की थी। उसे लेकर वे जिधर घूमते, उधर ही अंग्रेजों का सफाया हो जाता। भीषण युद्ध का समाचार कोलकाता पहुंचा, तो ब्रिगेडियर व्हीलर के नेतृत्व में नयी सेना आ गयी। अब रामसिंह चारों ओर से घिर गए। ब्रिटिश रानी विक्टोरिया का भतीजा जॉन पील पुरस्कार पाने के लिए स्वयं ही रामसिंह को पकड़ने बढ़ा, पर चण्डी के एक वार से वह धराशायी हो गया।

अब कई अंग्रेजों ने मिलकर षड्यंत्रपूर्वक घायल वीर रामसिंह को पकड़ लिया। उन पर फौजी अदालत में मुकदमा चलाकर आजीवन कारावास के लिए पहले सिंगापुर और फिर रंगून भेज दिया गया। रंगून की जेल में ही मातृभूमि को याद करते हुए उन्होंने 17 अगस्त, 1849 को अपने प्राण त्याग दिए। 'डल्ले की धार' पर लगा शिलालेख आज भी उस वीर की याद दिलाता है। नूरपुर के जनमानस में इनकी वीरगाथा 'रामसिंह पठानिया की वार' के नाम से गायी जाती है। ❑

अमरनाथ यात्रा की अवधि...

(पृष्ठ 27 का शेष)

राजतरंगिणी में इसका विशेष उल्लेख है। मुस्लिम आक्रमणकारियों के काल में भी यह यात्रा बंद नहीं हुई। 11वीं सदी में 12756 फुट ऊंची गुफा में शिव दर्शन के लिये गई कश्मीर की महारानी सूर्यमती ने त्रिशूल अर्पित किये थे। आदि शंकराचार्य, भगवान स्वामीनारायण, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुष अमरनाथ यात्रा पर गए। यह यात्रा भारत की एकता, प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और विरासत का एक महान प्रतीक है। जेहादियों ने पहले एके 47से हिन्दुओं पर प्रहार किया, अब वे यात्रा की अवधि कम करने के राज्यपाल के अधिकार को अपना हथियार बना बैठे हैं। जो भी सत्ता अमरनाथ यात्रा के बारे में गम्भीरता से कार्य नहीं करेगी वह भारत की एकता और भारत के संविधान पर ही आघात का मार्ग खोलेगी। यह चेतावनी समझ लेनी चाहिये। ❑

पाकिस्तान कर रहा है ऐतिहासिक कटासराज मंदिर का जीर्णोद्धार : फिरोज बख्त

कटासराज मंदिर पंजाब के चकवाल जिले में कटास गांव में स्थित है। पूर्वी इस्लामाबाद की साल्ट रेंज की पूर्वी तरफ स्थित इन मंदिरों को शताब्दियों से सतघडा मंदिर भी कहा जाता है। इस्लामाबाद-लाहौर सड़क मार्ग बन जाने के बाद ये मंदिर एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में उभरे हैं। यह लेक कल्लर कहार से चोआ सैदान शाह जाने वाली सड़क पर स्थित है। लेक कल्लर कहार से यह ज्यादा दूर नहीं है। इस मंदिर का निर्माण 9 से 11वीं शताब्दी के बीच उस समय हुआ था जब यह क्षेत्र कश्मीर के शक्तिशाली हिन्दू साम्राज्य का हिस्सा हुआ करता था। इस मंदिर परिसर में बहुत से मंदिर स्थित हैं किन्तु दुर्भाग्य से आजकल अधिकतर बहुत बुरी हालत में हैं।

समीप ही एक तालाब है जिसमें अत्यंत स्वच्छ और निर्मल जल मौजूद है। पाकिस्तान की ऐतिहासिक धरोहरों में यह तालाब सम्भवत: सबसे अधिक आश्चर्यचकित करता है। नि:संदेह, कटास प्राचीनतम वैदिक मंदिरों में से एक है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और यह महाभारत काल में निर्मित हुआ प्रतीत होता है। बताया जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास का अधिकतर समय यहीं व्यतीत किया था। अब **पाकिस्तान सरकार इसे विश्व ऐतिहासिक धरोहरों में शामिल कराने का प्रयास कर रही है। इसके अलावा वह इसके जीर्णोद्धार पर करीब 20 मिलियन रुपये तीन चरणों में खर्च कर रही है।** जीर्णोद्धार के तीन में से दो चरण पूर्ण हो चुके हैं, तीसरा चालू है। बताया जाता है कि जब भगवान शिव की पत्नी पार्वती की मृत्यु हुई तो वे इतने अधिक व्यथित हुए कि उनके आंसुओं से यह तालाब बना था। इसी के साथ एक अन्य तालाब अजमेर स्थित पुष्कर में बना था। प्राचीन बनावट तथा हजारों लोगों के लिये ताजे पानी का स्रोत होने के अलावा यह तालाब आसपास के हजारों एकड़ बाग-बगीचों की सिंचाई भी करता है।

जनरल कनिंघम के अनुसार ज्वालामुखी के बाद हिन्दुओं के लिये कटासराज ही दूसरा सबसे बड़ा पवित्र मंदिर था। बताया जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास के दौरान सतघड़ा मंदिर का निर्माण कराया था। अल बेरूनी ने भी यहां स्थित विश्व प्रसिद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय से संस्कृत सीखी और उसने यहीं रहकर अपनी पुस्तक, किताब-उल-हिन्द (हिन्दी की पुस्तक) लिखी थी। इस पुस्तक में तत्कालीन धार्मिक माहौल, वैज्ञानिक ज्ञान, हिन्दुओं की सामाजिक परम्पराओं आदि का विस्तार से वर्णन है। विख्यात तपस्वी पारसनाथ जोगी ने भी यहीं अंतिम सांस ली थी। गुरु नानक भी यहां आए थे। कटास को बाद में नानक निवास भी कहा गया, जहां बड़ी संख्या में साधु-संन्यासी, तपस्वी तथा महान संत रहा करते थे। मान्यता है कि यहां स्थित तालाब में स्नान करने से व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है। अब कटास मंदिरों का नियंत्रण संघीय सरकार ने पंजाब पुरातत्व विभाग को सौंप दिया है।

जनरल कनिंघम के अनुसार ज्वालामुखी के बाद हिन्दुओं के लिये कटासराज ही दूसरा सबसे बड़ा पवित्र मंदिर था। बताया जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास के दौरान सतघड़ा मंदिर का निर्माण कराया था। अल बेरूनी ने भी यहां स्थित विश्व प्रसिद्ध संस्कृत विश्वविद्यालय से संस्कृत सीखी और उसने यहीं रहकर अपनी पुस्तक, किताब-उल-हिन्द लिखी थी। गुरु नानक भी यहां आए थे।

कटासराज प्रबंधक कमेटी के प्रमुख पंडित जावेद अकरम कुमार का कहना है कि इस ऐतिहासिक मंदिर में जितनी भी ऐतिहासिक पवित्र चीजें थी उनमें से अधिकतर चुरा ली गई हैं। सिर्फ पत्थर की एक मूर्ति बची है। लेकिन उस पर तस्करों की नजर रहने का डर हमेशा सताता रहता है।

पंडित कुमार ने पंजाब पुरातत्व विभाग पर आरोप लगाया कि वह मंदिर की देखरेख में ज्यादा दिलचस्पी नहीं ले रहा है और न ही मंदिर की सुरक्षा हेतु कोई ठोस कदम उठाने को तैयार है। उन्होंने कहा कि यह मंदिर लम्बे समय से तस्करों का निशाना रहा है जो यहां से प्राचीन मूर्तियां चुराते रहे हैं। यही कारण है कि इस समय भगवान शिव की जो एक मूर्ति बची है उसके भी चुरा लिये जाने का खतरा हमेशा बना रहता है। श्री कुमार का कहना है कि यह मंदिर एक बहुत बड़ा तीर्थस्थल होने के कारण पर्यटकों के आकर्षण का बड़ा केन्द्र बन सकता था किन्तु पाकिस्तान सरकार ने इस ओर कभी ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि यह मंदिर पाकिस्तान के प्राचीनतम स्थलों में से एक है। कटास घाटी अपनी खूबसूरती के लिये शताब्दियों से प्रसिद्ध रही है। यहां एक बहुत बड़ा संस्कृत विश्वविद्यालय हुआ करता था जिसमें अनेक महान संस्कृत विद्वान तैयार हुए। प्राचीन विरासत के प्रशंसक लाहौर निवासी अफगान खान बताते हैं कि, 'यह बहुत ही दु:ख की बात है कि किसी भी सरकार ने आज तक इस आश्चर्यचकित कर देने वाली घाटी की खूबसूरती से फायदा उठाने का प्रयास नहीं किया। ❑

(लेखक मौलाना अबुल कलाम आजाद के प्रपौत्र हैं।)

प्राण और प्राणायाम

सम्पूर्ण ब्रह्मांड का निर्माण पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल व आकाश तत्वों के योग से हुआ है। इन पांच तत्वों के मूल में भी एक तत्व ऐसा है जो सर्वत्र विद्यमान है और वह है 'प्राण'।

'प्राण : प्रजा अनु वस्ते पिता पुत्रमिव प्रियम्।
प्राणो ह सर्वस्येश्वरो यज्ञ प्राणति यच्च न।।'

(अथर्ववेद 11/4/10)

अर्थात् जिस प्रकार पिता पुत्र के साथ रहता है उस प्रकार प्राण सब प्रजाओं के साथ रहता है। जो प्राण धारण करते हैं और जो प्राण नहीं धारण करते, प्राण ही उन सबका ईश्वर है।

चिकित्सा विज्ञान ने आपातकालीन चिकित्सा के लिये ऑक्सीजन का अब तक प्रयोग किया है अब वह दिन दूर नहीं जब समस्त रोगों के उपचार के लिये प्राण तत्व का उपयोग होगा। शरीर की उत्पत्ति के मूल तत्व शुक्र व रज में ऑक्सीजन का एक प्रमुख तत्त्व है जिससे शुक्राणुओं में सक्रियता रहती है तथा अण्डे में पोषण होता है। उपनिषदों ने शरीर को अन्नमय कोष कहा है। अन्न अर्थात् हमारा आहार जिसके मूल तत्वों में ऑक्सीजन की ही सहभागिता रहती है। हमारी पिण्डगत संरचना में भी ऑक्सीजन के अलावा अन्य तत्वों का भी समावेश है परन्तु पांच धातुओं एवं सप्त धातुओं से बने देह में सजीवता, चैतन्यता मात्र केवल ऑक्सीजन से ही आती है। ऑक्सीजन के द्वारा ही जीवन यज्ञ चल रहा है। नई कोशिकाओं के निर्माण-क्षय एवं ऊर्जा संचय का मुख्य तत्व प्राण ही है। शरीर में विध्वंसात्मक कार्यवाही को रोक कर सृजनात्मक व विधेयात्मक शक्तियों को अधिक सबल बनाने में भी ऑक्सीजन की ही मुख्य भूमिका है।

'प्राणामाहुमातरिश्वानं वातो ह प्राण उच्यते।
प्राणो ह भूतं भव्यं च प्राणो सर्व प्रतिष्ठितम्।।'

(अथर्ववेद 11/4/15)

अर्थात् प्राण को मातरिश्वा (वायु, ऑक्सीजन) कहते हैं। वायु का नाम ही प्राण है। भूत, भविष्य और सब कुछ वर्तमान काल में जो है वह सब प्राण में ही प्रतिष्ठित रहता है।

शारीरिक श्रम के अभाव, तनाव, विरुद्ध आहार, अनियमित दिनचर्या व असंयमित जीवन के कारण आज व्यक्ति के शरीर के भीतर एक भयंकर युद्ध चल रहा है। उसी का परिणाम है कि शरीर के दोषों वात, पित्त तथा कफ में असंतुलन बढ़ गया है। इस असंतुलन के कारण उच्च तथा निम्न रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा, हृदय रोग, अनिद्रा से लेकर अब तो कैंसर जैसे असाध्य रोग उत्पन्न हो रहे हैं। दोषों की इन विषमता के कारण ही हमें विविध औषधियों का आश्रय लेना पड़ रहा है।

इन सभी रोगों का उपचार एवं शमन कपालभाति, अनुलोम-विलोम, प्राणायाम द्वारा ही सम्भव हो सकता है। भ्रामरी तथा उद्गीथ आदि के द्वारा मानसिक स्तर पर श्रद्धा, समर्पण, आस्था, विश्वास व सकारात्मक चिंतन को जागृत कर हम एक स्वस्थ व चिंतामुक्त जीवन का प्रारम्भ कर सकते हैं। इस पूर्ण प्रकरण में ऑक्सीजन ही आधार बनता है। प्राणायाम के द्वारा ही गांठ तथा मेरूदण्ड के आप्रेशन से हमें किसी हद तक मुक्ति मिल जाती है। हृदय की शल्य क्रिया से भी हम बच जाते हैं। प्राणायण के वैज्ञानिक प्रयोगों के परिमाणों से हम यह कह सकते हैं कि प्राण अर्थात् ऑक्सीजन नामक तत्व जब कुछ मिश्रित विधियों द्वारा अन्दर या बाहर की ओर किया जाता है तो शरीर में स्वत: ही सकारात्मक परिवर्तन घटित होने लगते हैं और प्राण सम्पूर्ण औषध की भांति प्रयोग करने लगता है। मूलत: वेदों में भी प्राण विद्या का स्वरूप इस प्रकार मिलता है।

'आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रप:।
त्वं हि विश्व भेषजो देवानां दूत ईयसे।'

(ऋग्वेद 10/137/3)

अर्थात् प्राण भेषज है (ऑक्सीजन एक औषधि है) यह विविध रूप में भीतर प्रवाहमान होता है। यह मात्र औषधि ही नहीं बल्कि पूर्ण चिकित्सा है। प्राण सृष्टि की दिव्यताओं का संवाहक है। प्राण का आधार सम्पूर्ण आरोग्य है। छन्दोग्योपनिषद् के अनुसार ऋषि कहते हैं कि-

'प्राणों ह पिता प्राणे माता प्राणो भ्राता।
प्राण: स्वसा प्राण आचार्य: प्राणो ब्राह्मण:।'

(छन्दोग्य 7/15/1)

शरीर के भयानक रोग डिप्रेशन व स्किजोफ्रेनिया जैसे घातक मनोरोगों से त्रस्त व्यक्तियों के लिये योग के ऋषि कहते हैं कि- ऐ मानव! तू घबरा मत हिम्मत न हार, विचलित न हो, अकेलापन तथा असुरक्षा के भाव में न जी, निराश तथा हताश होने की आवश्यकता नहीं। प्राण की शरण में आ प्राणायाम कर। यह प्राण पिता है, प्राण माता है, यह भ्राता है, व स्वसा है, प्राण आचार्य व ब्राह्मण है। प्राण का सीधा प्रभाव हमारे विचारों पर पड़ता है। प्राणायाम से जब विचार शुद्ध हो जाता है तब व्यक्ति के आहार तथा व्यवहार शुद्ध हो जाते हैं। विश्व में जब भी नैनोटैक्नोलॉजी की बात होगी तो उसका मूलाधार केवल प्राण ही हो सकता है। इस विश्व को जन्म देने वाले और विश्व में हलचल करने वाले, सभी अन्य जीवधारियों में शीघ्रगति करने वाले हे स्वामी प्राण आपको सादर नमन है। ❑

संकलन : नितिन पराशर, चवाड़ी चम्बा

भ्रष्टाचार निवारण तथा व्यवस्था परिवर्तन

❑ पूर्णभगत मेहता

आज के युग में भ्रष्टाचार विशेष कर भारत में चरम सीमा पर है। सब जगह इसी की चर्चा होती है। सब चाहते हैं कि भ्रष्टाचार न हो। यहां तक कि वे सभी नेता व अधिकारी जो स्वयं भ्रष्टाचार व घोटाले करते हैं उसे मिटाने की बात करते हैं। उन्हें सदा दूसरों की हरकत पर नजर रहती है परन्तु स्वयं कितना भ्रष्टाचार रिश्वत खोरी अथवा घोटाले करते हैं उसे नजरअंदाज करते हैं और मामूली अपराध मानते हैं। अपनी ओर से की गई गलती का अपराध यथासम्भव दूसरों पर थोपने की कोशिश करते हैं। यदि हर इन्सान उच्च आदर्श, ईमानदारी, सच्चाई से निर्भीक होकर अपने कर्त्तव्य का निर्वहन तथा पालन करे तो भ्रष्टाचार होने का प्रश्न ही नहीं आता। किन्तु हर व्यक्ति अपना लाभ देखता है। यद्यपि ईमानदारी से काम करने पर धन का ज्यादा लाभ नहीं होता, मगर उसकी इज्जत दूर तक बनी रहती है। किन्तु ऐसे लोग बहुत कम ही होते हैं।

राजनीति में भ्रष्टाचार सर्वोपरि है। सत्ता में बने रहने के लिये सांसदों, विधायकों की सरेआम खरीद-फरोख्त होती है। मंत्री पद प्राप्त करने की होड़ इसलिये बनी रहती है ताकि सम्बद्ध विभाग के विकास कार्यों से तथा उसके निमित्त खरीदारी से मोटी कमीशन जेब में जाए। भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे की ओर बढ़ रहा है 'यथा राजा तथा प्रजा' उक्ति आज सार्थक हो चुकी है।

आज हर कार्यालय में जहां कर्मचारी और अधिकारी भ्रष्टाचारी हैं वहां बिना रिश्वत और घूस खिलाए काम ही नहीं बनता। वास्तव में अपराध की शुरुआत रिश्वत लेने से नहीं बल्कि देने से होती है। रिश्वत देते वे हैं जिनका काम कानूनन अथवा नैतिक रूप से अवैध होता है। किन्तु उसे वैध साबित करने के लिये रिश्वत का सहारा लेते हैं और अधिकारीगण कागजी हेराफेरी करके जो सम्भव नहीं था रिश्वत लेकर उसे सम्भव कर देते हैं। कई ऐसे अपराधी जो कानूनी दृष्टि से जघन्य अपराध करते हैं, भारी भरकम घूस देकर ही छूटने की कोशिश करते हैं। जैसे नाबालिग बलात्कार, खून (हत्या), अग्नि काण्ड, अवैध वस्तुओं की तस्करी, देश की सुरक्षा के विरुद्ध शत्रु से मेल मिलाप करके साजिश करना और कई अन्य अपराध घोटाले इत्यादि से बचने छूटने के लिये रिश्वत का सहारा लिया जाता है। यह सब रिश्वत का लेन-देन कभी न कभी उजागर होता है तथा औरों को भी इस रहस्य का पता चलता है।

अत: भ्रष्टाचार मात्र राजनेता, अधिकारी और कर्मचारी तक ही सीमित नहीं है इसकी जड़ें समाज की गहराई तक पहुंच चुकी है। सर्वत्र रिश्वत लेने वाले भी हैं और देने वाले भी। अब वातावरण ऐसा बन गया है कि न चाहते हुए भी इस का सहारा लेना पड़ रहा है। किसी की मजबूरी है किसी का आदत बन चुकी है। कुछ लोग बढ़ती महंगाई और कर्मचारियों के कम वेतन को भी रिश्वत लेने का कारण मानते हैं किन्तु वास्तव में वेतन की कमी ही भ्रष्टाचार का कारण नहीं है बल्कि कम वेतन लेकर काम करने वाले बहुत ईमानदार और परिश्रमी होते हैं जबकि उच्च वेतन पाने वाले अधिकारी, कर्मचारी और बड़े नेता जिनकी हजारों लाखों में आय होती हैं उनमें से ही अधिकांश बड़े भ्रष्टाचार करते हैं। कई बड़े लोगों के घोटाले इतने अधिक होते हैं कि उन्हें गलत तरीके से कमाये धन को रखने के लिये विदेशी बैंकों का सहारा लेना पड़ता है। यही पैसा काला धन है।

भ्रष्टाचार मात्र राजनेता, अधिकारी और कर्मचारी तक ही सीमित नहीं है इसकी जड़ें समाज की गहराई तक पहुंच चुकी है। सर्वत्र रिश्वत लेने वाले भी हैं और देने वाले भी। अब वातावरण ऐसा बन गया है कि न चाहते हुए भी इस का सहारा लेना पड़ रहा है। किसी की मजबूरी है किसी का आदत बन चुकी है।

उपरोक्त माध्यम से विदेश में धन का जाना अवैध है। कानूनन अपराध भी है लेकिन फिर भी ऐसा होता है। देश की गलत नीतियों के कारण भी खुलेआम पैसा बाहर जाता है।

अतएव हमारा पहला यह प्रयास होना चाहिये कि हम राज्य की विधानसभा और केन्द्र में संसद के लिए ऐसे प्रत्याशी का चुनाव करें जो स्वच्छ छवि वाला हो और देश हित में अपना ध्यान दे साथ ही उन नीतियों के निर्माण में सहायक सिद्धहो जो आम जनता के कल्याण और देश-विकास से जुड़ी हुई हो। सरकार ऐसी बननी चाहिये जो भ्रष्टाचार मुक्त हो। भ्रष्ट लोगों को इसमें लेना ही नहीं चाहिये। जो भ्रष्टाचार करते हैं उन्हें शीघ्र सजा मिलनी चाहिये। विदेशों से काला धन लाने से पहले व्यवस्था का उचित प्रबंध होना चाहिये। देश में कोई ऐसा नागरिक न हो जो भूखा सोता हो, नंगा रहता हो, कुपोषण से पीड़ित, शिक्षा स्वास्थ्य से वंचित हो। ❑

भारत से चीन पहुंचा बौद्ध धर्म

चीन के सबसे बड़े रेगिस्तान में 1500 वर्ष पुराने एक मंदिर के खंडहर का पता चलने के बाद इतिहासकारों को इस बात का प्रमाण मिल गया है कि बौद्ध धर्म का चीन में विस्तार भारत से हुआ था। मंदिर के मुख्य कक्ष की संरचना दुर्लभ है जो लगभग 3 चौकोर गलियारों और एक विशाल बौद्ध प्रतिमा पर आधारित है। उत्खनन परियोजना के प्रमुख पुरातत्व विज्ञानी वू सिन्हुआ ने कहा, 'इस इलाके में पुरात्वविद् 20 वीं सदी में जब से काम करने आए हैं, तकलीमाकन रेगिस्तान में अपनी तरह का यह सबसे बड़ा कक्ष पाया गया है।'

योग करो, मस्त रहो

न्यूयार्क के नामी-गिरामी कारोबारी केन्द्र टाइम्स स्क्वायर पर पिछले दिनों खूब रौल-चौल देखी गई। वहां 'माइंड ओवर मैडनैस' आयोजन के दौरान हजारों योग प्रेमी स्त्री-पुरुषों, बच्चों बुजुर्गों और युवक-युवतियों ने मिलकर योग प्रदर्शन किया। चौक पर हजारों को साथ-साथ योग अभ्यास करते देख आसपास के इलाके की सड़कें जाम हो गईं। कितने ही लोग कारें बाजू में लगाकर अपनी अपनी चटाइयां बिछाकर आसनों में शामिल हो गए। आयोजक डगलस स्टीवर्ट की मानें तो यह लगातार दसवां साल है। ❑

ब्राजील में योग कर रहा शांति का प्रसार

वैयक्तिक परिवर्तन से विश्व को बदला जा सकता है, इस विचार से प्रेरित होकर ब्राजील में योगा पेला पाज (शांति के लिये योग) का वृहद् आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम 13 से 19 अगस्त तक आयोजित होगा। योग शिक्षक मर्सिया डि लुका और प्रकाशक फ्रेन अब्रेऊ के द्वारा आयोजित यह गैर लाभकारी आयोजन स्थानीय जनता को ऐसा जीवन जीने के लिये शिक्षित करने पर केन्द्रित है जो उच्च चेतना और बढ़ी हुई जागरुकता युक्त है। कार्यक्रम में कक्षाएं, भाषण तथा कला सम्बंधी आयोजन भी सम्मिलित किये गए हैं। योगा पेला पाज के दौरान 10 से भी अधिक नगरों में योग विद्यालय के द्वारा शिक्षार्थियों और नवआगंतुकों को प्रशिक्षित किया जाएगा। दक्षिण अमेरिका में योगा पेला पाज वहां का वृहद्तम आयोजन रहा है और पिछले वर्ष इसे भारी सफलता मिली है। ❑

चीन सागर में तीन ब्लॉक

फिलिपींस ने दक्षिण चीन सागर में चीन के साथ ताजा तनाव के बावजूद तीन ब्लॉक्स की नीलामी करने का फैसला किया। पश्चिमी फिलिपींस में पालावान द्वीप में तेल और गैस के सबसे ज्यादा भंडार हैं। इसके पहाड़ी हिस्से में कीमती इमारती लकड़ी मिलती है। यहां मैगनीज, कॉपर और निकेल के पर्याप्त भंडार है।

ताजा विवाद स्कारबोरो शोल को लेकर है। फिलिपींस इसे अपने एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक जोन में बताता रहा है। लेकिन चीन इसे भी दक्षिण चीन सागर के साथ ही अपना बता रहा है। ऐसा ही एक क्षेत्र है रीड बैंक। हालांकि फिलिपींस ने इस पर कोई काम शुरू नहीं किया है लेकिन चीन इसे भी अपना ही बता रहा है। ❑

दक्षिण कोरिया में वैदिक गणित

श्री रवि कुमार हिन्दू स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालीन कार्यकर्ता है। सेवा इंटर नेशनल संस्था से वे संलग्न है। 26 अप्रैल से 30 अप्रैल, 2012 तक वे दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में थे। उनकी प्रेरणा से सियोल राष्ट्रीय विश्वविद्यालय और सुंग क्यून क्वान विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक गणित और वैदिक विज्ञान विषय पर वहां तीन कार्यशालाएं आयोजित की गई थीं। इन कार्यशालाओं में विश्वविद्यालयों के गणित विषय के प्राध्यापक, अधिष्ठाता, संशोधक विद्यार्थी और पदोत्तर वर्ग के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इन कार्यशालाओं के अनुभवों से वे इतने प्रभावित हुए कि ये कार्यशालाएं और अधिक समय चलाई जाए, ऐसी विनती उन्होंने की। इन कार्यशालाओं में से निकले तीन विद्यार्थियों ने बाद में एक मंदिर में वैदिक गणित के वर्ग लिये। श्री रवि कुमार ने सियोल के राधाकृष्ण मंदिर में दक्षिण पूर्व एशिया की जनता पर हिन्दुओं के प्रभाव पर सचित्र व्याख्यान भी दिये।

इन भाषणों में कोरियन भाषा और तमिल भाषा की समानता के अनेक उदाहरण उन्होंने दिये। उदाहरण सुनकर श्रोता आश्चर्यचकित रह गए। हिन्दू और कोरियनों के बीच की चलन व रीति का साम्य भी उन्होंने प्रतिपादित किया। उन्होंने एक कहानी भी बताई कि माता लक्ष्मी नाम की भारतीय राजकुमारी ने ई. स. 48 में कोरिया के राजा किम् सुरो के साथ विवाह किया था, आज के कोरियन उनकी संतान है।❑

कीटों की शरीर रचना

कीट इतना छोटा जीव है कि इसके बारे में यह विश्वास करना मुश्किल लगता है कि इसमें एक प्रवाह तंत्र तथा रक्त भी होता होगा। रोचक बात यह है कि कीटों में भी हृदय रक्त तथा अन्य अवयव यानी अंग होते हैं।

विश्व भर में हर जगह कीट पाए जाते हैं। ये सिर्फ गहरे समुद्रों में नहीं होते। पुरावशेषों से संकेत मिलता है कि कीट लगभग 400 मिलियन वर्षों से पृथ्वी पर अस्तित्वमान हैं। वे पर्यावरण तथा मौसमी परिवर्तनों के अनुकूल खुद को अत्यधिक तेजी तथा कुशलता से ढाल लेते हैं। कीट के शरीर को तीन भागों में बांटा जा सकता है- सिर, थोरैक्स तथा पेट। सिर में एक जोड़ी एंटिना होते हैं जो स्पर्श, स्वाद तथा गंध जैसी इंद्रियों से संदेश प्राप्त करते हैं। कीटों की आमतौर पर दो जटिल आंखें होती हैं जो उन्हें सही दृष्टि उपलब्ध करवाती हैं। इसके अतिरिक्त दो या तीन साधारण आंखें (ओसैली) होती हैं जो रोशनी या अंधेरे की पहचान करती हैं। इनमें मुंह में काटने या चबाने वाले जबड़े या फिर भेदने तथा चूसने वाले ढांचे मौजूद होते हैं। इनके सिर में दिमाग भी होता है जो नाड़ियों के माध्यम से शरीर के सारे हिस्सों से जुड़ा होता है।

थोरैक्स या शरीर के मध्य भाग में जुड़ी हुई टांगों की तीन जोड़ियां होती हैं। इन टांगों के सिरों पर चिपकने वाले पैड या पंजे मौजूद होते हैं। कीट ऐसे रीढ़ विहीन जीव है जिनके पंख होते हैं। हालांकि अधिकतर कीटों में पंखों की दो ही जोड़ियां होती हैं, जबकि कुछ में एक जोड़ी या फिर कोई पंख नहीं होता।

कीट के पेट में पाचन क्रिया, मल त्याग क्रिया, श्वास क्रिया तथा प्रजनन क्रिया इत्यादि जैसे अवयव स्थित होते हैं। पेट की लम्बाई के साथ-साथ स्पाईरेकल्स नामक छोटे-छोटे छिद्र होते हैं। ये श्वास नली में जाकर खुलते हैं जिससे कीट सांस लेता है। श्वास नली में से रक्त में जो ऑक्सीजन जाती है उसकी गति काफी धीमी होती है। यही कारण है कि अपने पूरे विकास के दौरान कीट बहुत छोटे आकार के रहते हैं।

प्रवाह प्रणाली में रक्त वॉल्व्स से सुसज्जित छिद्रों द्वारा हृदय में घुसता है जब हृदय संकुचित होता है तो ये छिद्र बंद हो जाते हैं और रक्त धमनियों के माध्यम से बाहर निकाल दिया जाता है। हमारी तरह कीटों में नाड़ी प्रणाली नहीं होती।

कीट के पेट में मल त्याग प्रणाली भी होती है। इस प्रणाली में शरीर का अधिकतर मल पानी के पुनः चक्रण द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है। यही कारण है कि कीट पानी के बिना बहुत लम्बे समय तक जीवित रह सकते हैं। एक मादा कीट में अंडे देने वाली ओवीपोजिटर नामक एक ट्यूब होती है।

कीटों का शरीर एक कठोर कवच से ढका होता है जो इन्हें चोटों से बचाता है और नमी को नियंत्रण में रखता है। आगे इनका पूरा शरीर छोटे-छोटे रेशों से ढका होता है। ये रेशे नाड़ियों से जुड़े होते हैं तथा स्पर्श करने पर अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। यही कारण है कि कीट बहुत धीमी हवा या गति को भी भांप लेते हैं। अधिकतर कीटों के पेट, थोरैक्स या टांगों में विशेष श्रवण अंग मौजूद होते हैं। इनमें से कुछ अंग तो एक पतली झिल्ली से ढके स्थान होते हैं, जो हवा की कंपन को प्रतिक्रिया देते हैं। ❑

इस अंक के उत्तर :

प्रश्नोत्तरी : 1. भारत के पश्चिमी तट पर मुम्बई से मेंगलूर के बीच, 2. 1905 में, 3. ये दोनों जमीन के भीतर उगते हैं, 4. राष्ट्रपति शासन प्रणाली, 5. कबीर, 6. स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, 7. कावाराती, 8. साबरमती, 9. यूआन, 10 इटली की।

With best compliments from

WINSOME

Textile Industries Ltd.
sco#191-192, Sector 34-A,
Chandigarh - 160022 (INDIA)

Tel: +91-0172-2603966,
4612000, 4613000
Fax: +91-0172-4614000
website: www.winsomegroup.com

कमण्डल और खीर

एक बार समर्थ गुरु रामदास भिक्षा मांगते हुए एक घर के सामने खड़े हुए और उन्होंने आवाज लगायी–'रघुवीर समर्थ।' घर की स्त्री बाहर आयी। उसने उनकी झोली में भिक्षा डाली और कहा, 'महात्मा जी, कोई उपदेश दीजिये।'

स्वामी जी बोले, 'आज नहीं कल दूंगा।' दूसरे दिन स्वामी जी ने पुन: उस घर के सामने आवाज लगायी।

उस घर की स्त्री ने उस दिन खीर बनायी थी, जिसमें बादाम-पिस्ते भी डाले थे। वह खीर का कटोरा लेकर बाहर आयी। स्वामी ने अपना कमंडल आगे कर दिया। वह स्त्री जब खीर डालने लगी, तो उसने देखा कि कमंडल में गोबर और कूड़ा भरा पड़ा है। उसके हाथ ठिठक गए। बोली, 'महाराज यह कमंडल तो गंदा है।'

स्वामी जी बोले–हां, गंदा तो है, किन्तु खीर इसमें डाल दो।

स्त्री बोली, 'नहीं महाराज, तब तो खीर खराब हो जाएगी। दीजिये यह कमंडल, मैं इसे शुद्ध कर लाती हूं।'

स्वामी जी बोले, 'मतलब, यह कमंडल साफ हो जाएगा, तभी खीर डालोगी न?' स्त्री ने उत्तर दिया, 'जी हां।'

स्वामी जी बोले, 'मेरा भी यही उपदेश है। मन में जब तक चिंताओं का कूड़ा-करकट और बुरे संस्कारों का गोबर भरा है, तब तक उपदेशामृत का कोई लाभ नहीं होगा। यदि उपदेशामृत का पान करना है तो प्रथम अपने मन को शुद्ध करना चाहिए, कुसंस्कारों का त्याग करना चाहिए। तभी सच्चे सुख और आनन्द की प्राप्ति होगी।' ❑

हंसते-हंसते

☺ पहली कक्षा के एक बच्चे ने अपनी अध्यापिका से पूछा, 'आपने मुझे थप्पड़ क्यों मारा?'
अध्यापिका, 'क्योंकि आप कक्षा में खड़े थे।'
बच्चा, 'तो फिर आपने खुद को थप्पड़ क्यों नहीं मारा?'
अध्यापिका, 'क्यों?'
बच्चा, 'क्योंकि आप भी तो हमें कक्षा में खड़ी होकर पढ़ा रही थीं।'

☺ विनय (संजय से), 'अगर आकाश में तारे न होते तो क्या होता?'
संजय, 'यही कि जब टीचर हमें थप्पड़ मारते तो हमें दिन में जो तारे नजर आते हैं, उनकी जगह खाली आकाश नजर आता।'

☺ एक व्यक्ति ने डॉक्टर से कहा, 'मैं बहुत थकान महसूस कर रहा हूं, कुछ मशविरा दीजिये।'
डॉक्टर ने जांच कर कहा, 'आप घर का काम-काज करते-करते थक गए हैं। अब ऑफिस जाना शुरू कर दीजिये।'

☺ सर, 'मनोज, तुम दो दिन से तबला सीखने क्यों नहीं आए?'
मनोज, 'सर मेरे पास एक ही कुर्ता पायजामा है। वह मैंने धोया था इसलिये परसों नहीं आया।'
सर, 'और कल क्यों नहीं आए?'
मनोज, 'जी कल मैं आया था मगर आंगन में आपका कुर्ता-पायजामा सूखता देखकर मैं वापिस चला गया।'

विश्व में हिन्दी का बढ़ता प्रभाव

- हिन्दी सीखने के लिये विदेशी आ रहे हैं भारत में।
- 80 हिन्दी स्कूल हैं अमरीका में।
- 95 हिन्दी स्कूल हैं कनाडा में।
- 24 विश्वविद्यालय हैं मॉरीशस में।
- 95 हिन्दी शिक्षण संस्थान है ऑस्ट्रेलिया में। और एक आज के युवा हैं भारत में, जिन्हें हिन्दी बोलने में बेइज्जती महसूस होती है।

प्रश्नोत्तरी

1. कोंकण रेलवे कहां स्थित है?
2. आजादी से पूर्व बंगाल का विभाजन कब हुआ था?
3. अदरक और आलू में क्या समानता है?
4. अमेरिका में किस तरह की शासन प्रणाली है?
5. बीजक किस महान कवि की कविताओं का संग्रह है?
6. भारत का सबसे पुराना वर्तमान में भी कार्यरत बैंक कौन-सा है?
7. लक्षद्वीप की राजधानी कहां है?
8. महात्मा गांधी ने डांडी यात्रा किस स्थान से प्रारम्भ की थी?
9. चीन की मुद्रा क्या है?
10. लीरा कहां की मुद्रा है?

सबका हित–
सबका कल्याण

सबसे ऊपर हिमाचल

अटल बिजली बचत योजना के अन्तर्गत प्रदेश में सभी 16.5 लाख घरेलू बिजली उपभोक्ताओं को 65 करोड़ रुपये खर्च कर चार-चार सी.एफ. एल. बल्ब मुफ्त दिए गए। प्रदेश में सभी घरेलू एवं कृषि बिजली उपभोक्ताओं को प्रदेश सरकार द्वारा सस्ती दरों पर बिजली उपलब्ध करवाई जा रही है। इसके लिए सरकार दे रही है 190 करोड़ रुपये की सबसिडी।

अटल स्कूल यूनिफॉर्म योजना के अन्तर्गत सभी सरकारी स्कूलों में पहली से दसवीं कक्षा तक सभी विद्यार्थियों को इस वर्ष से साल में दो बार यूनिफॉर्म फ्री दी जा रही है। इस पर सालाना 64 करोड़ रुपये खर्च होंगे।

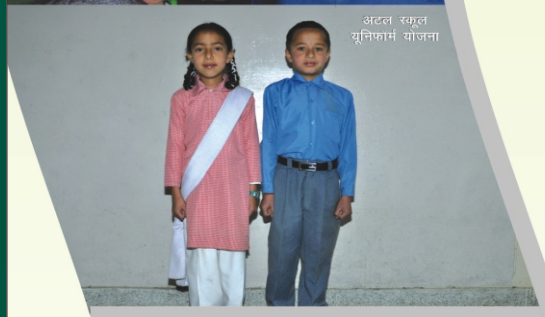

अटल स्वास्थ्य सेवा योजना के तहत सभी को गम्भीर बीमारी एवं किसी भी आपातकालीन स्थिति में एम्बूलेंस उपलब्ध करवाई जा रही है फ्री।

सभी राशन कार्ड धारकों को हर महीने तीन दालें, दो खाद्य तेल और नमक सस्ते मूल्य पर उपलब्ध, जिसके लिये सालाना 130 करोड़ रुपये की सबसिडी प्रदान।

प्रेम कुमार धूमल
मुख्य मंत्री, हिमाचल प्रदेश

जनहित को समर्पित आपकी सरकार

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

HP/48/SML (upto 31-12-2014) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

उद्यान विभाग हिमाचल प्रदेश-पुष्प पौधशालाएं

पुष्प उद्यान विभाग, द्वारा पुष्प पौध सामग्री के संग्रह, प्रजनन एवं किसानों को पुष्प पौध सामग्री उचित दर पर उपलब्ध करवाने तथा फूलों की खेती को प्रदर्शित करने एवं किसानों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से

- नवबहार, उद्यान निदेशालय तथा छराबड़ा, जिला शिमला (हि. प्र.)
- आदर्श पुष्प केंद्र महोबाग, चायल, जिला सोलन (हि.प्र.)
- परवाणु, जिला सोलन (हि.प्र.)

पुष्प पौधशालाओं में उपलब्ध सामग्री का विवरण

पौधे का प्रकार	पौधे की किस्में
बलबस पौधे	क्लीविया, कैलालिली, बिगोनिया, साइकलामेन, एलस्ट्रोमेरिया, लिलियम, ग्लेडियोलस, डहेलिया, नरगिस, डैफोडिल्ज, आइरिस, ऐगापैन्थस इत्यादि।
सजावटी वृक्ष	मैगनोलिया, लैबरनम, पौपुलर, चिनार, एरोकेरिया, रबर प्लांट, थुजा इत्यादि।
सजावटी झाडियां	एब्युटीलान, बुडेलिया, कैमिलिया, हिबिस्कस, हाइड्रेन्जीया, जैसमिन, जुनीपर, नेरियम, स्पाइरिया, फोरसिथिया, वाईगेला, गुलाब, डयूटजिया, युनाईमस, कैरिया इत्यादी।
बेलें	पैशन फूल, क्रीपर गुलाब, टिकोमा, विस्टिरीया, ईगलीश आई वी, एम्पीलोपसीज, मनी प्लांट, हैड्रा इत्यादि।
फूलदार पौधे	पिटुनिया, गुलदाउदी, ट्री. बिगोनिया, प्राइमुला, प्राइम–रोज, बैड आफ पैराडाईज, जैकोबिना, कारनेश्यान, सिनरेरिया, स्टेटिस, फयूशिया, जरबरा, बैलपरोन, कलैंचु इत्यादि।
सजावटी पत्ते वाले पौधे	मौन्सटेरा, फिलोडैन्ड्रान, पाम, एग्लोनिमा, कलोरोफाइटम, कोलियस, डिफेनबेकिया, पिलिया, एसपैरागस, शैफलेरा, नोलिना इत्यादि।
टोकरियों में उगाने वाले पौधे	ट्रेडस–कैंशिया, पिलिया, हैड्रा, क्यूफिया, जिरेनियम, एपटिनिया, रौक–रोज, सीडमज, इत्यादि।
कैकटस तथा स्कूलेंटस	एलोबेरा, इकाइनोकैकटस, ऐयोनियम, क्रिसमस कैकटस, औपंशिया, मैमलेरियाज, टगेव इत्यादि।
सर्द ऋतु के मौसमी पौधे	ऐन्टीराइनम, कैंडिट्रफट, कलैण्डुला, गुडेशिया, पैन्जी, पौपी, स्वीट पी इत्यादि।
ग्रीष्म/वर्षा ऋतु के मौसमी पौधे	ऐस्टर, बालसम, मैरीगोल्ड, सीलोशिया, सुरजमुखी, कोचिया, गजेनिया, सालविया इत्यादि।

पुष्प सामग्री एवं तकनीकी जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करें : –

सहायक पुष्प विज्ञ
उद्यान निदेशालय, नवबहार, शिमला–2 (हि.प्र.)
दूरभाष : 0177–2842773–115

सहायक परियोजना अधिकारी
ईण्डों–इटालीयन फल विकास परियोजना,
बजौरा, जिला कुल्लु, (हि.प्र.)
दूरभाष : 01902–265154

विषय विशेषज्ञ
आदर्श पुष्प केंद्र
उद्यान विभाग, महोग–बाग, चायल, जिला सोलन, (हि.प्र.)

प्रभारी
आदर्श पुष्प केंद्र
उद्यान विभाग, होल्टा, पालमपुर, जिला कांगड़ा,

मातृवन्दना प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा शर्मा बिल्डिंग, बीसीएस, शिमला - 171 009, से प्रकाशित।